सखी सियाअली जी

कृत

मधुर पदावली

संकलक एवं प्रकाशक

वैदेही वल्लभ शरण

श्रीहनुमान बाग, अयोध्या

श्री सीताराम

श्री सीताराम

प्रकाशक
वैदेही वल्लभ शरण
श्री हनुमान बाग,
वासुदेव घाट, अयोध्या-२२४१२३

© सर्वाधिकार
प्रकाशकाधीन

पुस्तक प्राप्ति-स्थान

- प्रकाशक
- श्री रसमोद कुंज,
  ऋणमोचन घाट,
  अयोध्या-२२४१२३
- अवधेश वस्त्रालय,
  नयाघाट, अयोध्या
- वाल्मीकि प्रकाशन,
  काजीपुर, पटना-८००००४

संस्करण
प्रथम संस्करण : ११००
श्री रामनवमी, सं० २०४९

निछावर : १५/- रु०

मुद्रक
पाण्डेय प्रेस
मुसल्लहपुर,
पटना-८००००६

आमुख

सीतानाथ समारम्भां रामानन्दार्यं मध्यमाम् ।
अस्मदाचार्यं पर्य्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ।।

कृपारसवर्षिणी सुनयनान्दवर्धिनी श्री किशोरीजू की कृपा-कटाक्ष से सुश्री सियाअलीजी की कोमलकान्त रचनाओं को "मधुर पदावली" के रूप में सुधी समाज को आज सौंपते हमें अपार हर्ष हो रहा है। श्री युगल सरकार की रसमयी लीलाओं से प्रधानतः सम्बन्धित इन सरस-मधुर रचनाओं का यह अनूठा संग्रह अवश्य ही परमानन्द प्रदान करेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

श्री सीतारामीय उपासिका प्रसिद्ध कवयित्रियों (सर्वश्री सुन्दरि कुँवरि, विष्णु प्रसाद कुँवरि, प्रताप कुँवरि बाई, महारानी वृषभानु कुँवरि, कांचन कुँवरिजी आदि) की पावन परम्परा में सुश्री सियाअलीजी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी हैं। "समय-रस-वर्धनी" अथवा "नित्य रास-लीला" के रचयिता श्री सियाअलीजी से भिन्न हमारी सुश्री सियाअलीजी रसाचार्य स्वामी श्री जीवाराम 'युगल प्रिया'जी के वंशावतंश महात्मा श्री जानकीवर शरण 'प्रीतिलता'जी के कृपापात्र अवध के प्रमोदवन (बाद में मिथिला भवन) के संतवर,श्री युगल विहारिणी विहारी शरणजी महाराज की परम भावुक शिष्या थीं। ख्याति से कोसों दूर रहकर इन साधिका ने सैकड़ों अनमोल पदों आदि की रचना की जो अबतक अप्रकाशित ही रही थीं। प्रस्तुत संग्रह में हमने उनकी रचनाओं का संकलन कर सम्प्रति २६६ रचनाओं को प्रकाशित कर साधना एवं साहित्य दोनों में यथोचित योगदान करने का प्रयास भर किया है। ऐश्वर्य-माधुर्य पर आश्रित उपासना में मुक्तक शैली का प्रयोग बहुत ही सहज ढंग से प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है। इनमें वन्दना, बधाई, सोहर, कजरी, झूला, होली, चैता, रास, नामोपदेश, सांझी, अष्टयाम सेवा आदि के पद, कवित्त, सवैया, कुंडलियाँ, दोहा, बरवै, रेखता, गजल आदि सभी में मणि-कांचन संयोग देखते ही बनता है। यही नहीं, ये सारी रचनाएं राग-रागिनियों और संगीतप्रियता से ओत-प्रोत हैं। सारी पदावली मधुर तो है ही, पूर्णतः गेय है।

ऐसी कवयित्री किसी विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में शिक्षा पाने से वंचित रही थीं। परन्तु महात्मा कबीर के शब्दों में "ढाई आखर प्रेम के पढ़े सो पंडित होय"—वे परम भागवत और विशिष्ट विदुषी थीं। इनका आविर्भाव मिथिलांचल (बिहार) में सुपौल के निकट नाना के घर कमला-गंगा के तट पर अवस्थित सुखपुर स्टेट में विगत शती में हुआ था। गन्धवरिया क्षत्रिय ठाकुर राय साहब इनके नाना थे महाबड़भागी भक्त एवं नानी भी थीं प्रभुचरणानुरागी। उत्तर प्रदेश, गोरखपुर मंडल के शिरनेत क्षत्रीय वंशज और जमीन्दार बाबू सुन्दर सिंह एवं धर्मप्राण श्रीमती योगमायाजी की तृतीय संतान थीं भोलीजी, जो कालान्तर में दीक्षा पाकर सियाअली हो गई। इनके जन्म के पूर्व ही एक भाई एवं बहन संसार में अधिक टिक नहीं पाये थे। नाना-नानी के दरवाजे पर विराजते थे श्री लक्ष्मीनारायण और मन्दिर के बाहरी भाग पर श्री हनुमानजी, जिनकी कृपा से एक महात्मा इनके यहाँ पधारे और बच्चों के जन्म-मरण सम्बन्धी एक रहस्य इन्होंने ही बताया। भोलीजीके पिता-माता ने महात्मा की बातों पर ध्यान दिया तो चौथी संतान क्षेमा भी जन्मी और दीर्घकाल तक दोनों बहन जीवित ही नहीं, लोक-परलोक सुधारने में भी सफल रहीं। दोनों पर श्री किशोरी जी की कृपा थी जो दोनों एक ही ग्राम में ब्याही गईं, एक ही गुरु से शरणागति और अन्ततः सुगति पायी। दोनों बहनों ने पुरजन-परिजन आदि सबको आनन्दित किया।

सुश्री भोलीजी का विवाह उत्तर प्रदेश के बस्ती मंडलान्तगत रसूलपुर ग्राम के एक सम्भ्रान्त क्षत्रिय परिवार में बाबू सूर्यनारायण पाल के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री कृष्ण बिहारी पाल से समय पर हुआ। धन-धान्य से पूर्ण पीहर में भौतिकता का चकाचौंध था। पति बाल-स्वभाव एवं बाल चेष्टाओं वाले हो गये थे। फिर भी भोलीजी पर इनका कुप्रभाव नहीं पड़ा। वे भगवान को स्मरण करती रहतीं और गृह-कार्य में लगकर सबको प्रमुदित करती रहती थीं। छोटी बहन क्षेमाजी भी उसी परिवार के बाबू ठाकुर पाल के मंझले आत्मज श्री जय बिहारी पाल से ब्याही गयी थीं। भोली जी निस्सन्तान थीं। क्षेमाजी को एक पुत्र-रत्न की प्राप्ति के पश्चात् अचानक असामयिक वैधव्य मिला था। बाबू ठाकुर पाल अपनी पुत्र-वधु को सदैव सान्त्वना और प्रभु-सेवा की प्रेरणा देते रहते थे। दोनों बहनों ने पुण्य-पुंज पाया था। एक दिन श्री अयोध्या से संत गुरुदेव बाबू ठाकुर पाल के घर पधारे। क्षेमाजी शरणागत हो गयीं। इसकी सूचना जैसे ही

भोलीजी को मिली, वे चुपके से श्री महाराजजी के चरण-रज लेने आयीं और शरणागति पाकर ही अपने घर लौटीं। श्वसुर बहुत ही क्रोधित हुए दीक्षा की बात जानकर, पर किया भी क्या जा सकता था !

जब द्रवहिं दीन दयाल राघव साधु संगति पाइए।
जेहि दरस परस समागमादिक पाप पुंज नसाइए।।

और

पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता।
सत संगति संसृति कर अंता।।

दोनों बहनों ने जान लिया था—

प्रीति राम पद नीति मग, चलिअ राग रिष जीति।
तुलसी संतन के मते, यही भगति की रीति।।

इनके हृदय में प्रेमदेव समाहित हो चुके थे। भोलीजी अब सुश्री सियाअलीजी हो चली थीं। अष्टधातु के श्री युगल सरकार की सेवा नियमपूर्वक करने लगीं। परात्पर पुरुष श्री सिया दुल्लह सरकार विग्रह रूप में जो इनके पास पधारे थे! इनके पीहर वाले परिवार को खजूरगावाँ छोड़कर क्रमशः परसायाँ और कुदराहा ग्राम में दैववशात् बसना पड़ा। संयोग की बात सुश्री सियाअली जी कुदराहा आयीं तो योगिराज श्रीप्रयाग दासजी महाराज द्वारा संस्थापित मन्दिर में श्री युगलसरकार की लीलाओं के दर्शन और स्वनामधन्य परमहंस श्री रामकिंकर दासजी की सत्संगति के लाभ उन्हें सहज प्राप्त हो गये। श्री सियादुल्लह सरकार से नित्य हास-परिहास, विनोद-विलास आदि का आनन्द भी घनीभूत होने लगा। समय-समय पर श्री अयोध्या की तीर्थ-यात्रा भी होने लगी। श्री रामवल्लभा-कुंज के सन्त शिरोमणि श्री स्वामी रामपदार्थ दासजी महाराज जब भी कुदराहा पधारते तो उनकी सेवा में सुश्री सियाअलीजी बहुत आह्लादित रहतीं। वर्षोत्सवों के आयोजन और इनमें अपने ललित पदों का गान करती हुई बहुत भाव-विभोर हो जातीं। उपस्थित श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते थे।

श्री अवध-वास में सुश्री सियाअलीजी श्री वेदान्तीजी के स्थान (जानकी घाट) पर काफी दिनों तक ठहरीं। श्री युगल सरकार की सेवा, स्वरूप सरकार की झांकी के अवसरों पर पद-गान, सन्त-समाज की यथाशक्ति सेवा तथा समस्त प्राणियों को आत्मीयता प्रदान करना अपना सौभाग्य

मानती थीं। एक दिन वेदांतीजी महाराज ने इनसे कहा था—"क्या बात है, मैं तुम्हें कभी भी मंत्र आदि जप करते नहीं देखता ?" उत्तर मिला—"श्री युगल सरकार के दर्शन से फुर्सत ही नहीं है, जप कब करें!" श्री वेदान्तीजी मर्म जानकर विभोर हो गये थे। शैशव काल में अपने नानाजी के मन्दिर में साक्षात श्री विष्णु प्रियाजू ने किशोरी रूप में इन्हें दर्शन दिया था। तब वे सात वर्ष की ही तो थीं! काल-क्रम में पुरातन प्रीति प्रगाढ़तर होती गई और सुश्री सियाअलीजी ने वह सब पा लिया जिसे जन्म-जन्मान्तर की साधना पर भी लोग नहीं पाते हैं।

एक दिन कुदराहा में बनारस से एक कायस्थ (जो सद्गृहस्थ और राजकीय सेवक थे) पधारे श्री मानस की कथा कहने। दरवाजे पर ही बड़ी सरस कथा हो रही थी, और आंगन में एक बालक का क्रन्दन—सुश्री सियाअलीजी कथा-स्थल की ओर हवेली से बढ़ीं। हायरे भाग्य, धुंधलके में दीखा नहीं, जल रहित कूप में गिर पड़ीं! कंकड़, पत्थर आदि से भरे कूप में आपका शिरोभाग नीचे हो गया था। गिरने की आवाज सुनकर लोग दौड़ पड़े, कूप से शरीर सप्राण निकला किन्तु मन का श्री दुल्लह सरकार से मिलन हो गया था शायद। तीन दिनों तक मधुर अनुभूति सँजोये आपकी पंचभौतिक देह और आत्मा साकेतबासिनी हो गई। आपकी शिष्या और चचेरी लघु भगिनी श्रीमती उमा देवी यह बताते हुए अतीत की उन कटु-मधुर स्मृतियों में आज भी खो जाती हैं। लगता है, दशकों की नहीं, यह कल्ह की ही बात है। ऐसी महती श्री की अधिकारिणी सुश्री सियाअलीजी जी जय हो!

"मधुर पदावली" में भावों की प्रधानता है, भाषा फिर भी प्रांजल है। भावुक कवयित्री ने जीवन्त शैली में पुरातन भणिति भंगिमाएं सहज उतारी है; जाने-सुने भावों में भी प्रति पद नया रस प्रकट करती लगती हैं। अपने ताजे-टटके अनुभवों को ऐसा पिरोया है कि ये रचनाएं सर्वथा नूतन, मौलिक एवं स्वतंत्र दीख पड़ती हैं। पदों में शील मर्यादा का निर्वाह पूर्णतया किया गया है। लीला-गान में मिथिला भाव है। भाषा में

अवधी, मैथिली, भोजपुरी, उर्दू, ब्रज, राजस्थानी आदि क्षेत्रीय शब्दों का उपयुक्त प्रयोग तथा परिष्कृत साहित्यिक अभिरुचि इन रचनाओं की विशिष्टता है। माधुर्योपासना की पुष्ट परम्परा में एक अनूठी कृति है यह! आशा है, सुधीजन सुश्री सियाअलीजी कृत "मधुर पदावली" के पाठ-मनन से यथेष्ठ लाभान्वित होंगे।

प्रस्तुत पुस्तक के शीघ्र प्रकाशन का लोभ वर्षों से था। रचनाओं के संकलन-सम्पादन में काफी समय लगा, मुद्रण-व्यय का प्रबन्ध भी श्री हनुमानजी की कृपा से यथासमय हो गया किन्तु पुस्तक-प्रस्तुति का कार्य अति विलम्बित ही हुआ। तथापि प्रसन्नता है कि देर से सही, पुस्तक तो अब आपकी सेवा में है ही। इसके अगले संस्करण में त्रुटियों के सुधार, पदावली के विस्तार आदि पर पूरा ध्यान दिया जायेगा। इस कार्य में सहयोग देनेवाले सभी प्रेमियों को हार्दिक साधुवाद!

श्री रामनवमी, सं० २०४९
११-४-१९९२ ई०
वासुदेव घाट, अयोध्या

वैदेही वल्लभ शरण
श्री हनुमान बाग

विषय-सूची

अनुक्रम		पृष्ठ
१.	श्री गुरु वन्दना	१
२.	श्री चन्द्रकला वन्दना	१
३.	श्री राम जन्म	१
४.	श्री जानकी जन्म	६
५.	श्री चन्द्रकला जन्म	१०
६.	फूल बंगला	१२
७.	रथ-यात्रा	१३
८.	झूलन-कजरी	१४
९.	जल विहार	१९
१०.	सांझी	१९
११.	रास	२१
१२.	श्री हनुमान-बधाई	२२
१३.	चौपर	२२
१४.	रंगीली होली	२३
१५.	चैती	२७
१६.	मन-प्रबोध	२९
१७.	नाम-उपदेश	३१
१८.	विनय	३२
१९.	रेखता	३३
२०.	दुलहा के पद	४०
२१.	दोहा	४३
२२.	विनय : प्रियाजू के प्रति	४७
२३.	विनय : प्रीतमजू के प्रति	४७
२४.	अष्टयाम	५१
२५.	खेमटा	५३
२६.	परिछन	५४
२७.	झांको	५४
२८.	गजल-दादरा	५५
२९.	झूला-चैता	५७
३०.	जेवनार-गारी	५८
३१.	विविध	६०

* श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः *

* श्री सीताराम चरणकमलेभ्यो नमः *

श्री सियाअली-कृत

मधुर पदावली

गुरु वन्दना

जय श्री गुरुमूरति मंगलकारी ।।
जेहि सुमिरत हिय को तम नाशत दर्शन भवभयहारी ।
परम दयाल दयामय स्वामिनी बरसावत सुखकारी ।।
पान करत शीतल सुखमय जल हृदय ताप त्रयहारी ।
'सियाअली' सरसत अनुपम रस दरसत प्रीतम प्यारी ।।

श्री चन्द्रकला-वन्दना

श्री चन्द्रकला जू आस तिहारो ।।
नवल नेह सियावर पद अनुदिन बढ़ै इहे अरज हमारी ।
नित्य विहार नवल कुंजन की लखि वन सेवा-अधिकारी ।।
खास महल की टहल देहुँ नित, सिया प्रसाद स्वाद सुखदारी ।
'सियाअली' सहचरी पूरबहुँ आस जाऊँ बलिहारी ।।

श्रीराम-जन्म

आज समय सुखकारी हो रामा बाजी बधाई ।
प्रगट भये प्राणन के प्यारे छाय रही सुख भारी ।हो रामा
हिल मिल चलू सजनी राजभवन को लूटहुँ आनन्द सारी ।।हो रामा
धन्य अवध धनि अम्ब कौशिल्या जहाँ प्रगटे सुखकारी ।हो रामा
'सियाअली' तन मन धन वारिये निरखन अवध बिहारी ।।हो रामा

(४)

आज सखी चहुँ ओरवा हो रामा नौबत बाजै ।।

अवध नगर सब डगर-डगर में मंगल गान के शोरवा हो ।
वेगि चलो री मिलि जुरि सजनी राजमहल की ओरवा हो ।।
प्रगट भये त्रिभुवन जीवन धन शोभित रानी जू के कोरवा हो ।
'सियाअली' छवि लखि नाचन लागी ज्यों घन लखि मोरवा हो ।।

(५)

लखि-लखि वारे ललनवाँ हो रामा अँखियाँ सुफल भई ।।
घुंघरारी कारी कालि जुलुफिया शोभित कमल नयनवाँ हो ।
किलकि रहे रानी जू कोरवा भावत मन्द हँसनवाँ हो ।।
धनि-धनि भाग हमार कि सजनी चुभती मन को हरनवाँ हो ।
'सियाअली' अब नित हम अइबै देखन सुख के सदनवाँ हो ।।

(६)

बरसि रहे आनन्द अवध में जेहि सुख को तरसि रही ।।
जेहि सुख को चातक यह अँखियाँ बहुत दिन से तरसि रही ।
प्रगट भये सोई राजदुलारे चलि देखिये नृप महल सही ।।
हरषित भई सखी आस लता हिय पाय महारस विहँसि रही ।
'सियाअली' लखि लखि प्यारी छवि अंग अंग सुख बरसि रही ।।

(७)

आज भयी मनभायी अम्ब मोहि दीजै बधाई ।।
त्रिभुवन सम्पति गोद तीहारी सबंसु देहु लुटाई ।।
बहुत दिनन पे भाग जगी है लैहों नेग आज मनभाई ।
मोतिन हार मातु निज गर की देहुँ हमें पहिराई ।।
चिरजीवैं तेरो चारो ललनवाँ भोगहुँ सुख अधिकाई ।
'सियाअली' प्यारो मुख चूमति पुनि पुनि लेत बलाई ।।

(८)

रानी लैबो निछावरि आज राजदुलारे की ।।
पुत्र जन्म सुनि हम सब धाई तजि गृह के सब काज ।
लखन छवि वारे की ......

गाय बजाय सुनाचि दिखइबो मंगबो तजि सब लाज ।।
अवध नृप वारे की ……
जड़ीदार लहंगा लैबै अलिया अंगिया बूटैं जड़ो की साज ।
जोड़ गलहारे की ……
'सियाअली' युग जुग जीवैं लालन नित प्रति बाढ़ै राज ।।
अवध दरवारे की …… ।।

(१०)

देखो देखो नृपति द्वार बधइया बाजि रही ।

सुन्दर सुत महारानी जायो अवध कियो उजियार ।
मृगनैनी पिकवैनी मिलि मिलि गावत मंगलचार ।।
हेलि चलो सब राजभवन को लूटहुँ सुषमासार ।
'सियाअली' लालन छबि लखि लखि प्राण करौं बलिहार ।।

सोहर

धनि धनि चैत महीनवाँ कि सुघर सुहइया हो रामा ।
प्रगट भये रघुरइया परम सुखदइया हो रामा ।।
धनि धनि अवध नृपति वर प्रभु प्रगटावहिं हो रामा ।
धनि धनि अम्ब कौशिल्या दिवस देखावहिं हो रामा ।।
जो सुख दुर्लभ ब्रह्मादिकन सब देवहिं हो रामा ।
अवध नगर के बसइया सहजहि में पावहिं हो रामा ।।
द्वार बजे आनन्द बधावा महल बीच सोहर हो रामा ।
शोभित रानीजो के कोरवा ललनजू मनोहर हो रामा ।।
आरति करहिं युवति जन मंगल गावहिं हो रामा ।
"सियाअली" तेरो जीवन धन लखि सुख पावहिं हो रामा ।।

(११)

निरखु सखी बाजत आनन्द बधाई ।।

लूटहुँ आज अमित सुख आली प्रगटे हिय सुखदाई ।
चलि लीजै दोउ लोचन फल शोभा श्री रघुराई ।।
धन्य आज को दिवस सखि री धन्य कौशिल्या माई ।
'सियाअली' प्यारी अँखियन को जो यह सुख बरसाई ।।

(१२)

आज समय सुखकारी हो रामा बाजी बधाई ।।
प्रगट भये प्राणन के प्यारे छाय रही सुखदाई हो रामा ।
मिलि सजनि चलु राजमहल को लूटहुँ आनन्द सारी हो रामा ।।
धन्य अवध धनि अम्ब कोशिल्या जहँ प्रगटे सुखकारी हो रामा ।
'सियाअली' तन मन धन वारियै निरखत अवधबिहारी हो रामा ।।

(१३)

बाजत आनन्द बधइया हो रामा अवध नगरिया ।
बहुत दिनन को आस मनन को विधिना आज पूजइया हो रामा ।
प्रगट भये महाराज महल में त्रिभुवन के सुखदइया हो रामा ।।
कोई नाचति कोई गावत हिलिमिलि प्रमुदित लोग लुगइया हो रामा ।
'सियाअली' के ये प्राण निछावरि निरखत मुख रघुरइया हो रामा ।।

(१४)

दीजै रानी बधाई ललन की ।
बहुत दिनन से आस हमारी आज भई मनभाई ।।
पायो तुम त्रिभुवन की सम्पत्ति दीजै मोहि बधाई ।
बड़ भागन मांगन दिन आयो दीजै चित हरषाई ।।
नित खेलैं मम उर आंगन में तेरो लला रघुराई ।
'सियाअली' याहि धन मांगति दीजै आज पुराई ।।

(१५)

प्यारी बाजो रहि आनन्द बधइया हो रामा ।
त्रिभुवन सुखमा सुनु सजनि नृप घर राजि रही।।
मंगल गान करहिं सब युवती मंगल साजि रही ।
'सियाअली' लालन छवि निरखहिं दृग बीच आँजि रही ।।

छठी

आई छठी दिन आज रजनी प्यारी सखी ।
मंगल गान चहुँ दिशि छाई लागी नौबति बाज ।।रजनी।।
बगि चलो री राजमहल को लै लै आरति साज । रजनी।।

पूजत छठी गोद ले लालन रानी युत महाराज ॥रजनी॥
पीत वसन लालन तन शोभित भाग दिठौना भ्राज ॥रजनी॥
'सियाअली' तहं कमल नयन में दीनो काजर आंज ॥रजनी॥

(१७)

नृपति घर सोहै चारों ललनवां ॥

बहुत दिनन पर महाराज के जागे भाग फलनवां ॥
द्वै गोरे सखी अति मन भावत द्वै छवि श्याम वरनवां ॥
लखि ले उरि यह सुन्दर जोड़ी झूलत हेम पलनवां ॥
'सियाअली' महाराज महल में बरसत सुख की खनवां ॥

(१८)

पालने में झूलत रघुरईया ॥

मातु झुलावति हिय हुलसावति निरखति मुख सुख दइया ॥
हिय लगाय कबहुँ पयप्यावति कबहुँ लेति बलइया ॥
कबहुँ चुटको बजाय बुलावति कबहुँ गावति मईया ॥
'सियाअली' धनि अम्ब कोशिल्या जिन यह सुख बरसईया ॥

सोहर

अवध नगरिया सोहैया आनन्द बरसइया हो ।
रामा धनि यह सुखद समइया रघुरइया आजु जनमे हो ।
सुखदइया आज जनमले हो ।
मिलि मिलि चलो री सहेलिया राजा के महलिया हो ।
हमरे राजाजी के बाजेला बधइया रघुरइया हो
आजु जनमे सुरसइय्या हो ।
देव सुमन बरसइया वा दुन्दुभी बजइया हो रामा,
प्रमुदित लोग लुगइया रमैय्या आज जनमे सुखदइया, आजु-
गावहिं गान गवइया नाचहिं थेइया थेइया हो ।
रामा रानीजी के गोदिया सोहइया रघुरइया, आजु ....
छवि पर बलि बलि जइया ललन सुघरइया हो ।
रामा 'सियाअली' हिय के बरसइया रघुरइया
आजु जनमले हो ।

(२०)

आगने में बधैया बाजै ।

चन्द्रमुखी मृग नयनी अवध की तोरत तानन रागने में ।
प्रेम भरी प्रमदागण नाचैं नूपुर बांधे पायने में ।।
न्योछावर श्री रामललाजू को नहि कोउ लाजत मांगने में ।
'सियाअली' यह कौतुक देखत बीती रजनी आगने में ।।

श्री जानकी-जन्म

आज आनन्द मची मिथिला में, प्रगटो मिथिलेश किशोरी ।
तीहुँ लोक सुनि मगन भये सब, आनन्द सागर उमगि चली री ।।
गगन देव दुंदुभी बजावहिं, सब मिलि मंगल गान करो री ।
मंगल थार सजो सब आली राज महल को वेगि चलो री ।।
देखत सुन्दर रूप लली को तन मन धन को वारि दियो री ।
चिरजीवो 'सियाअली' की स्वामिनि मम उर महल आय बसो री ।।

(२२)

आलि चलो जहाँ बाजे बधाई ।।

भई शोर चहुँ दिशि बाजत कि देखो बाजत सहनाई ।
घर घर की सब युवतिन मिलि-मिलि मंगल थार सजाई ।।
हुलसि चली सब राज भवन में आनन्द मंगल गाई ।
निरखि लली छवि डारी निछावरि पुन पुनि लेत बलाई ।
'सियाअली' निज भाग्य बखानहिं नेनन को फल पाई ।।

(२३)

बाजी बाजी आनन्द बधावरी ।

सुनि बधावन मिथिलापुर वासिन प्रेम मगन उठी धावरी ।।
कोई सखी नाचति कोई बजावति कोई मिलि मंगल गावरी ।
करति कुतूहल भूपति आँगन मिलि मिलि के सब नागरी ।।
कहति सबै सुनो अम्ब सुनैना देहुँ ललि निछावरी ।
'सियाअलि' कछु दूजो न लईहों ललि चरण अनुराग रो ।।

श्री जानकी जी की बधाई

रावल रंग बधाई बाजइ छै।
मंगलमयि महरानि सुनैना सुन्दरि कन्या जाई छै॥
सखियन हिय सरसई छै मंगल गावत आई छै।
'सियाअली' शोभा त्रिभुवन की जनक नगर पर छाई छै॥२४॥

सोहर

आज श्रीमिथिला नगरिया में नौबति बाजत री॥
रामा घर घर आनन्द बधइया परम सुख छाजत री॥
श्री महाराज जनकजी के भाग्य उदित भई री॥
रामा त्रिभुवन की सुख सीमा सियाजू प्रगट भई री॥
शिव ब्रह्मादिक तरसत जाके चरन रज की।
रामा धनि धनि मिथिला नगरिया सुभाग्य नारी नर की॥
निरखत भरि भरि नैन ललीजू की प्रभा शोभा वर री।
रामा सरसत सुख हिय बिच चरण चित लागरी॥
'सियाअली' कर जोरि निछावरि मांगति मोद भरी॥
रामा हिया बिच राखो ललीजू कै छवि मोहि भावत री॥२५॥

(२६)

मिथिला नगरिया सोहावनि सुख सरसावनि हे॥
रामा जहँ प्रगटि सुखअयना सिया जू मनभावनि री।
रामा घर घर प्रति आनन्द बधइया बाजत री॥
रामा नभ से हरषित देव सुमन बरसावत री॥
रामा श्री मिथिलेश मगन होय निछावरि बाँटत री॥
रामा वेगि चलो तहँ सजनि सु मंगल गावत री।
रामा धनि धनि रानी सुनैना गोद सिया शोभित री॥
रामा उमा रमा ब्रह्माणि चरण रज वन्दित री॥
रामा आज बधाई लली जू की अम्ब मोहिदीजै री॥
रामा नित सिया जू को निहारि 'सियाअली' जीबै री॥

(२७)

आज सखी धन्य भाग्य हमारी ॥
ये प्राणनहु के प्राणिनि सिय जू प्रगट भई सुकुमारी।
जो भरि नैना सुनयना को भई अब देखन वारी ।
निवछावर लईहौं अम्ब से पद सेवन अधिकारी।
'सियाअली' निस दिन संग रहिहौं चरण सरोज निहारी ॥

(२८)

आलि चलो जहाँ बाजि बधाई ॥
भई शोर चहुँ दिशि बाजन की देखो बाजत सहनाई।
घर घर की सब युवतिन मिलि मिलि मंगल थार सजाई।
हुलसि चली सब राज भवन में आनन्द मंगल गाई ॥
निरखि लली छवि करहिं निछावरि पुनि पुनि लेत बलाई।
'सियाअलि' नित भाग्य बखानहिं नैनन को फल पाई ॥

(२९)

मिथिलापुर नौबत बाजि रही ।
जहँ तहँ वारवधु मिलि नाचहिं युवतिन मंगल गाय रही ॥
हर्षि देव सुमन बहु बर्षहिं चहुँ दिशि आनन्द छाय रही।
धन्य धन्य हो रानी सुनैना धन्य मिथिलेश गृह सुख छाय रही ॥
त्रिभुवन विदित प्रभाव ईश्वरो सो तुम्हरे घर आय रही।
'सियाअली' हिय आस वेलि यह आज हरित हो फुलाय रही ॥

(३०)

आज बजत राजमहल सहनाई सखि उर आनन्द छाई ॥
प्रगट भई श्री जनक किशोरी आज महानिधि सब पाई।
श्री मिथिलेश भवन यहि सुख भये सर्वस देत लुटाई ॥
चलि लीजै लोचन फल प्यारी त्रिभुवन की छवि छाई।
'सियाअली' प्राणन की प्यारी लेऊ निज हिया से लगाई ॥

(३१)

प्यारी बाजी बधाई मिथिलापुर सुखदाई ॥
प्रगट भई श्री राजदुलारी चहुँ दिशि आनन्द छाई।

मिलि चलिये री राजमहल को मंगल साज सजाई ॥
अम्ब सुनैना सुखअयना को देहुँ हमें दिखलाई।
'सियाअली' यह स्वामिनि मेरी हो करिहौं सेवकाई ॥

(३२)

मिथिलापुर आनन्द रूपमई।

आनन्द के अवन प्राण के सर्वस, आजु सिया जू जन्म लई ॥
आनन्द की धुनि बाजि बधाई, सोहिलो गान आनन्दमई।
श्री मिथिलेश छके आनन्द में, सर्वस आज लुटाय दई ॥
दरसत आनन्द रूप लली की, जय-जय चहुँ दिशि छाय गई।
'सियाअली' आनन्द छन ही छन उर बीच बाढ़त नित्य नई ॥

(३३)

आज दीजै निछावरी महरानीजू मेरी ॥
मंगल भई तोहे अम्ब सुनैना प्रगटो राजकिशोरी।
अखिलेश्वरी तव घर आई पायहु सुख बहुतेरी ॥
चिरजीवै यह राजदुलारी मोहि बनाइये चेरी।
'सियाअली' प्यारी पद पंकज देहु प्रेम रसो री ॥

(३४)

चिरजीवै सुनैना तेरो लली ॥

याको देखि हृदय शीतल भयो आनन्द सागर उमड़ि चली।
धन्य-धन्य हो अम्ब सुनैना आज महानिधि तोहि मिली ॥
सदा आनन्द रहै प्यारीजू सुषमानिधि सुख देय भली।
'सियाअली' पाई निज स्वामिनि बहुत दिनन पै भाग्य फली ॥

श्री चन्द्रकला जन्म-बधाई

बधाई आज बाजत प्यारी ॥

जन्म दिवस श्री चन्द्रकला जू की छाई सुषमा भारी ।
धन्य आज को दिवस सखीरी प्रगटी यह सुखकारी ॥
सखियन्ह की सौभाग्य मूल यह जनकलली की दुलारी ।
'सियाअली' इन रसदायिनी के चरणन पै बलिहारी ॥३५॥

(३६)

आज सखी री चन्द्रभानु घर बजत बधाई रंगभरी ।
प्रगट भई श्री चन्द्रकलाजू आओ चलो यह धन्य घरी ॥
श्रीजनकलली की प्यारी सखी सब अलियन की शिरताज री ।
'सियाअली' इनके पद सेवत दुर्लभ रस कर बीच घरी ॥

(३७)

आजु महल बिच बजत बधाई ।

जनकलली की अली प्रगट भई चन्द्रकला सुखदाई ॥
चन्द्रप्रभाजू की सुकृत राशि जनु दिव्य देह धरि आई ।
गावत गुण गंधर्व गगन बिच सुमन सुरन झरि लाई ॥
नृत्य करत अप्सरा मोद भरि अंग उमंग बढ़ाई ।
जनक नगर की डगर डगर में बाजत डफ सहनाई ॥
शची शारदा उमा रमा रति लली दरश कहँ छाई ।
'सियाअली' मिलि चलि तिनही सग लली हरषि उर लाई ॥

(३८)

आज श्री मिथिला नगर मंगल चहुँ दिशि छाइ रही ।
मनहु यह सुख की घटा आनन्द को बरषा रही ॥
जनकजा को छठी के दिन शशिकला प्रगटी सखी ।
यह खुशी के दिन खुशी कैसे हिया उमगाय रही ॥
बाजती चहुं ओर से प्यारी बधाई रंग भरी ।
नाचती महलों में मिलकर अली मधुर स्वर गा रहा ॥

'सियाअली' इस मौज में करती निछावर प्राण की।
आज मम सौभाग्य वेलि फलित सुख सरसा रही ॥

बाल-लीला

पगन कब चलिहौं राजदुलारी।

ठुमुक ठुमुक कब मणि आंगन में पग धरिहौं सुकुमारी ॥
कब सुनिहौं तव बोल तोतरे श्रवण सुखद किलकारी।
कबहिं निरखिहौं इन नैनन ते क्रीड़ा सखिन मँझारी ॥
कबहिं मात कहि मोहि टेरिहौं पूजहि आस हमारी।
जननि निरखि मुख चन्द्रकलाजू को कहति लेति बलिहारी ॥
'सि..ाअली' सुनि मातु मनोरथ सकल भांति सुखकारी।
चितै मातु तन मृदु मुसुकानी सर्वेश्वरी जू हमारी ॥

(४०)

घुट्ठरुवनि धावति राजदुलारी ॥

कटि किंकिनि कर कंगन बाजत पग नूपुर घुनि मिलि सुखकारी।
मनहुँ अलौकिक नाद त्रिवेणी विहरति मणिमय महलन मँझारी ॥
जबहिं बिहँसि किलकति छिनहि छिन दसन कान्ति दमकति दुतिकारी।
मनहुँ दुति दामिनी मगन गगन तजि लली अधर विलसति छविधारी ॥
गगन चन्द्र की कला मलिन भई अवनि चन्द्रकला लखियारी।
वह निशि यह क्रीड़ति निशिवासर दिवस मलिन वह यह छविकारी ॥
कबहुक ठुमुक चलति आंगन बिच कबहुक लरखराति सुकुमारी।
दौरि मातु लै अंक भरति तब 'सियाअली' पुनि पुनि बलिहारी ॥

(४१)

सादर सुमुखि निहारि लली मुख चन्द्रभानु नृप लेत सुकनियाँ ॥
गोर सरोज वदन अति शोभित, मनहुँ चन्द्र अवतरेउ धरनियाँ।
मन्द हँसनि मुखचन्द्र विराजत, निरखउ लाजत चन्द्र किरनियाँ ॥
चचल चपल लोल लोचन अली, जोरत चितहिं चारु चितवनियाँ।
स्वेत श्याम रतनारे नयनन काजर रेख कहत नहि बनियाँ ॥
बंक भृकुटि बिच विन्दु विराजत, कल कपोल नासिका नयनियाँ।
कानन कनक फूल अति राजत, कठुला कंठ जरित गजमनियाँ ॥

हलरावत चुचुकारि दुलारत, कबहुँ नृपति कबहुंक नृपरनियाँ।
कटि किंकिनि कर कंकण बाजत, रुनझुन बाजत पाँय पैजनियाँ।।
मनु ध्वनि व्याज पिया नामावली, रटत छिनहिछिन पिय सुखदनियाँ।
'सियाअली' लखि सर्वेश्वरी छवि, लगत शची रति रौतहनियाँ।।

(४२)

श्री चन्द्रकला जू झूलत पलना, श्री चन्द्रप्रभा जू झुलावै हो।।
चकई लइ और फिरकिनी, अपने हाथ खेलावै हो।
कबहुँ नयन महँ काजर आँजत, भाल डिठौना लावहि हो।।
ललिया कहतु आव निदरियाँ, कबहुँ लोरी गावहिं हो।
पीन झीन झुगुलि पहिरावत, फूलन शीश सजावै हो।।
मन्द मन्द विहँसति पलना महँ, हरषि हरषि दुलरावै हो।
'सियाअली' निरखत वह शिशु छवि, बार बार बलि जावै हो।।

फूल बंगला

प्यारी दिलदार राजै फूलन को बंगला।

फूलों के भूषण छाजे नयन छवि फूलन गरहार।।
युगल गलबहियाँ डारे हरन मनवारे शोभित शृंगार।
जीवत 'सियाअली' तेरी निरख छवि तेरी जाऊँ बलिहार।।४३।।

(४४)

फूल बंगला में सोहै युगल रसिया।
फूलों की हार हर मेल विराजै, फूलों की सोहै नवल पगिया।।
शीशफूल करन फूल फूलन ही की कसी अँगिया।
'सियाअली' तन मन फूले फूल बिहार बसी हिय अँखिया।।

(४५)

फुलगेंदा से मार्यो छयल हँसि के।

बैठे रहे फूलन बंगले में फूल शृंगार किये जी के।।
जूहिन से जिय लेत सखीरी चोरा चमेली लई चितके।
कमल हिये बिच कहर करै री फेंकी गुलाब गहि गसिके।।
मोल सरिसे मोल लई री कुन्द से कैद कियो कसिके।
खेलत फूल हरत री सरबस 'सियाअली' हिय में धसिके।।

(४६)

मन भावै सखी री गुलाब गजरा ॥
वेलिन पाग सजत सीवेनी कानन कमल हरत हियरा।
कंठाकंठ लसत जूहिन को चंपकली शोभित हियरा ।।
पीत चमेली कंकन राजे कुंदकली पायजेब जोहरा।
फुल श्रृंगार पै नेछावर 'सियाअली' को तन मन जियरा ॥

(४७)

सखी फूल बंगला आई बहार ।
चुनि चुनि फूल चलो री ल्यावैं बंगला करैं तैयार ॥
बेला चमेली मेहरावै जूही को बिच बिच जालीदार।
लावें गुलाब गुच्छा दुहुँ दिशि फूलन की डार ॥
तापर राजें प्रीतम प्यारी करि फूलन श्रृंगार।
'सियाअली' छवि लखि लखि सजनी प्राण करूँ बलिहार ॥

रथयात्रा

सजनी रथ पर दोउ सोहि रहे ॥
गल भुजहार बहार देत सखि मृदु मुस्कान मन मोहि रहे।
प्यारी के सिर कुसुमी चुनरिया पिय सिर कलंगी भ्राज रहे ॥
'सियाअली' रथ याहि गयल में आवन की मग जोहि रहे।
आय विराजे रतन सिंहासन सखी सब मंगल गाय रहे ॥

(४८)

शोभित रथ पर नवल आजु ।
नवल रूप वय नवल साज, नवल भूषण अंग विराज ॥
युगल नवल श्रृंगार साज 'सियाअली' हिय मदन भ्राज।
आवत सजि सखि समाज, हगन द्वार पर रहे विराज ॥

(५०)

प्रमोद वन भींजत दोउ सुकुमार ॥
दै गलबाँही परस्पर विहँसत बरसत बूँद न्यारी।
चूवत चुनरी रंग कपोलन लखि पिय होत बलिहारी ॥
निज पट सों पियमुख पोंछहिं अलि निचोवै सुधारी।
'सियाअली' या छवि के ऊपर तन मन ही सब वारी ॥

झूलन

सावन आये सुनो मोर पियरवा झूलिये सरयू किनार ।रामा।।
मोरवा चहुँ दिशि शोर मचावे पपीहा करत पुकार ।रामा।।
प्यारी संग पिय झूलन चलिये प्रीतम प्राणाधार ।रामा।।
दोउ मिलि गलबहियाँ दै राजै यहे झूलन की बहार ।रामा।।
'सियाअली' हिय लाय झुलइहौं दोउ मुखचंद निहार ।रामा।।५१।।

(५२)

तनिक धीरे धीरे झूलो झूलनवाले ।
प्यारी अति सुकुमारि हमारी तुम हो प्यार के प्याले ।।
लीजै अंक लगाय लाड़िली झुलिये झोंक संभाले ।
'सियाअली' मैं बलि बलि जाऊँ हँसि हँसि कंठ लगाले ।।

(५३)

कुंजन बीच आज आलि जुगलवर झूलें ।
दीने दोउ गलबहियाँ द्रुमन की छहियाँ झलकत शिरताज ।।
फहरात पीत पिछौरी चुनरीकी छोरी अनुपम छवि छाज ।
प्यारे के आज मैं झुलइहौं हिया से लगइहौं सिया अलिन समाज ।

(५४)

दोउ झूलत सरजु लहरिया में ।
कंचन खंभे मणिनमय झूला झूलत अजब बहरिया में ।।
उत पिय पटुका की छवि छहरत इत छवि देत चुंदरिया में ।
पिय भुजहार लसत करकंकन त्यौं छवि देत मुंदरिया में ।
'सियाअली' यह नित नव झूलन झूलत नेह नगरिया में ।।

कजरी

अपने प्यारे राजललन संग झूलन गावैरी अली ।
सरयू तट में नेह हिंडोला लगाऊँ री अली ।।
उमगि उमगि पिय प्यारी को झुलावैरी अली ।
'सियाअली' झूलन छवि लखि लखि गावैरी अली ।।५५।।

(५६)

जै जै दोउ झूलनहार। कुंजन बिच कदम डार।
झूलन शोभा अपार। राजत गल भुजनहार।
चहुँदिशि पावस बहार। मध्य लसत छवि शृंगार।
बरसत आनन्दसार। 'सियाअली' बार बार।
युगलचन्द छबि निहार। गावत सखि ध्वनि मलार।।

(५७)

बरसत आनद आज सरयू तट प्यारी।
युगलचंद मंद मंद झूलत आलिवृन्द संग
गावत सब भरि उमंग पावस सुखकारी।
राजत छवि अंग अंग दामिनि घन पड़े मंद
चितवन सखि नयन फन्द बिहँसि बिहँसि डारी।।
जीवन धन प्रिया संग भीने सखि प्रेमरंग
सरसत सुख अंग अंग भुजन अंश धारी।
'सियाअली' हूँ आनंद देखों सखि भरि उमंग
राखौं हिय कुंज युगल रसिक रासबिहारी।।

(५८)

झूलन पर वारी झूलनवाले।
सावन मनभावन तेरो झूलन अति सुखकारी।।
झूलो झुलावो सुख सरसावो हिलि मिलो प्रीतम प्यारी।
'सियाअली' निरखें यह शोभा तन मन प्राण बिसारी।।

(५९)

झूलन मेरे दिलदार की नयनों में छा रही।
उत शाम घटा छाई इत श्याम छटा है।
उत दामिनी की दमकन इत पै लजा रही।
उत सावन चहुँ ओर है लगती सुहावनी।
इत झूलन आनंद की धारा बहा रही।
भुजहार की बहार गले बीच में लसै।
यह मंद मंद मुसकान दिल को लुभा रही।

'सियाअली' युगल वर की शोभा निहारिये।
चितचोर की दृगकोर मन को भा रही।

(६०)

धीरे धीरे झांको दोऊ नोखे झुलनवारे ना।
ज्यों ज्यों पेंग धरत त्यों करकत कदम की डारे ना।
हौं डरपति पिय मानत नाहीं हौं हठवारे ना।
'सियाअली' झूलो वा रसिया संग निहारे ना।

(६१)

सजनी अवध छयल फुलवरिया झुलन चलो हिंडोलवा ना।
पचरंग फूल परी नव झूलन सुमन बंगलवा ना।
झूलि रही मेरी सिया स्वामिनी संग पियरवा ना।
'सियाअलि' झूलत मनमोहन हँसी गर लगवा ना।।

(६२)

झूलो मेरे नयनों मैं चितचोर।।

दृग भीतर नई कुंज बनाऊँ डारौं प्रेम हिंडोर।
झूलो आय श्याम सुन्दरवर प्रीतम राजकिशोर।।
शोभा सिंधु हरन मन वारों कोटि तिरछे दृग कोर।
झूलत लाल निरखि सुख पाऊँ हँसि हेरन मन भोर।।
किमि कहिये यह रूप माधुरी साजन काम करोड़।
'सियाअली' अनुपम छवि निरखौं जैसे चंद चकोर।।

(६३)

झूलें दोउ मन के मोहनहार।

विपिन प्रमोद पड़ी नव झूलन कुंज कदम की डार।।
झूलत प्रिय दोउ घनदामिनि छवि बरसत प्रेम अपार।
उत सावन इत मनभावन छवि लागत अजब बहार।।
यह छवि निरखि मगन भई अंखियाँ एक एक रहत निहार।
पीवत आई रूप माधुरी दीनी सर्वस हार।
'सियाअली' प्यारो झूलन पर प्राण करो बलिहार।।

(६४)

महबूब की झूलन सखी क्या खूब है बनी।
हरियाली वन सघन में यह सांवली घटा।
नयी दामिनी के संग में क्या खूब है बनी ।।
मानो बरस रहो है अनुराग की झड़ी।
प्यासी दृगन की आज छबि क्या खूब है बनी ।।
ये जीवनहु के जीवनधन है 'सियाअली' की।
मनमोहनी छबि आज की क्या खूब है बनी ।।

(६५)

सावन तुम पै सुहाती है झूलन की बहारैं।
तेरी छबि को बढ़ाती है झूलन की बहारैं ।।
तेरे घनघोर में झूलें मेरे घनदामिनी।
झरती है मन को हरती है मुसकन की फुहारैं ।।
तुमने ज्यों इन्द्रधनु तानी मो दिशि भूचाप त्यों,
चलते हैं मैके जाने चितवन के सहारैं।
'सियाअली' नैन भरि लीजै यह शोभा सावनी।
कबहुँ ना ये अघाती है जो हरदम निहारैं ।।

(६६)

तेरे झूलन पै वारी मैं जाऊँ रसिया।
झूलत हौ लिये संग रसीली, चितचोरन मृदु हँसिया ।।
कबहुँ झुलकत हौं झोकनसे कबहुँ लपटि गर गसिया।
कबहुँ झूलन की सुधि भूलत, हेरत हौं मुख शशिया ।।
कबहुँ अधर सुधारस पीवत, कबहुँ लगावत छतिया।
'सियाअली' पगि रस झूलन में मन नैनन छवि बसिया ।।

(६७)

रगरी तोरे सँग ना झूलौं अब से ।।
झोंका देत कहा नहीं मानत छयल हठीलो भये कैसे।
कोटि करो अब गर ना लगोंगी, हटो मति बातें करो ऐसे ।।
चरण गहो जनि दूर रहो जू काम कहाँ प्रीतम हमसे।
'सियाअली' यह रूठन की छबि, झूलन पै भावत कैसे ।।

(६८)

झूलै शशि महल में आली दोउ रंग हिंडोलवा ना।
अद्भुत झूलन आज की प्यारी चित को चोरवा ना।
जहँ देखत तहँ झूला झूलत दोउ मनहरवा ना।
'सियाअली' अलिन मन मुदित झुलवति गाय मलरवा ना॥

(६९)

ऐसे सावन में सजनवा अब झूलोंगी तोरे संग।
जैसे उतरे श्याम घटा उत तैसे इतै उमंग॥
उत बरसं घन रिमिझिम बुंदिया इतबरसै रसरग।
'सियाअली' सावन मनभावन सरसावत अंगअंग॥

(७०)

सजनी अवधछयल चितचोरवा हँसि हँसि हियरा हरलै ना।
करि करि तिरछे दृगन के कोरवा नजरा मरलै ना॥
मीठे बैन कहत रसबोरबा नियरा अइलै ना।
'सियाअली' लगि लगि गरवा जियरा लिहलै ना॥

(७१)

सरजू में सखि शोभा नए, लखु प्रिया प्रीतम छवि भरे,
कंचनमई नौका चढे, दोउ दिए गलभुजहार करत बिहार।
द्युति गौर सुंदर श्याम की मन हरण शोभाधाम की,
हरत बहु रति काम की जनु बसत छवि सिंगार, करत बिहार।
अलीवृंद चहुं दिशि में खड़ी गावत है रागै रस भरी,
नाचति महामुद सो परी, बाजत मृदंग सितार, करत बिहार।
'सियाअली' नैन चकोर मेरी, लगी दोउ मुखचन्द हेरी,
भूलि सुधि तन वसन केरी मगन होत निहार, करत बिहार।

झूलन के झोंके जरा देना संभाल के
रफ्तार झूलने की देख भाल के।
पिय गोद मे मुख अपना छिपा रही मैथिली
और प्यारे विहँस रहे हैं रूमाल डाल के

जल विहार

चलो खेलैं पिया संग नाव री।
राजललन श्री राजनंदिनो इनही के संग आव री।
सरजू बीच छटा दोउन को लखि लखि के सुख पाव री॥
गाय बजाय रिझाय पिया को हिय बिच मोद बढाव री।
'सियाअली' दोने गलबिहियाँ सो छबि हिय में बसाव री॥७२॥

(७३)

करत दोउ रसिया नौका बिहार।
रतन जड़ित कंचन की नैय्या बनो मुरैलाकार।
ता बिच राजत पिय प्यारी दोउ दिये गलभुजहार॥
चहुँ दिशि खड़ो अलिगन बजत मृदंग सितार।
'सियाअली' सरजू तरंग बिच बिहरत दोउ सुकुमार॥

साँझी

मैं वारी प्यारे तेरी चतुराई।
देखि प्रिये तब कर कमलन की रचना अति सुखदाई।
रंग रंग की सुमन सजावट मम मन रहेउ लुभाई॥
परम सुभग बन बेलिकुंज छबि सरयू कूल सुहाई।
निरखि अपनो रूप लाल तहँ विहँसि प्रिया उर लाई॥
निरछाबरि प्रिये तव रचना पै तन मन गयउ बिकाई।
'सियाअली' रीझे नवनागर बार बार बलि जाई॥७४॥

(७५)

सुंदर साँझी लखो री वीर।
निरखु आजु रचना प्यारी की परम सुभग तसबीर।
रचति बेलि बाटिका मनोहर सुंदर सरयू नीर॥
तहँ प्रीतम को चित्र उरेहति विहरत सरयू तीर।
करि सिंगार सुमन के अ ्भुत सुन्दर श्याम शरीर॥

निरखत रूप अनूप माधुरी प्यारी भई अधीर।
'सियाअली' पिय बेगि बुलाओ हरन हृदय की पीर॥

(७६)

सुन्दर सांझी लाल बनायो।
कहि न जात छबि यहि रचना की, अनुपम गति दरसायो।
अद्‌भुत रचे कुंज द्रुम डारे नवल लता लपटायो॥
जो निज भृकुटि फेर माया सो तिहूँ लोक रचवायो।
ताकी कर कमलन को रचना को उपमा कहि पायो॥
क्या छबि देत सुमन की डारै सुन्दर भ्रमर लुभायो।
'सियाअली' कछु कहत बनै नहि देखत ही बनी आयो॥

(७७)

नवल रसिया नव सांझी बनाई।
नवल बाग नव कुञ्ज मनोहर सरयु कूल सुहाई।
नवल प्रिया के रूप रचे तहँ अंग अंग छबि छाई॥
ता पै नवल श्रृंगार सुमन को सो छबि कहि नहि जाई।
नवल रूप अपनो रचि प्यारी नवल प्रेम दरसाई॥
प्यारी भुज अपने गर डार्‌यो, निज भुज प्रिये लपटाई।
'सियाअली' जनु द्वै रूप बिच एक हार पहिराई॥

(७८)

मिलि साँझी निरखत पिय प्यारी।
दै गलबाँह उमंग रंग सो, कोटि मदन रति छबि पर वारी।
प्यारी की छबि निरखत प्रीतम, प्यारी साँवल रूप निहारी॥
अलिगन चहुँ दिशि भानुकमल इव, जोहति हैं तन दसा बिसारी।
'सियाअली' सखि आज रसिकवर साँझी के मिस इते बिहारी॥

रास

रमत सिया दुलह रास नवोनो ।
शरद चाँदनी छिटकि रही री, ता मधि दोउ रस भीनी ।
नइ नइ राग अलापत प्यारो, प्यारो गर भुज दीनी ।।
निरखि निरखि मुखचन्द्र प्रिया को, पिय चकोर दृग कीनी ।
'सियाअली' बलि जात रसिकवर, कोटि काम छबि छीनी ।।७९।।

(८०)

रसीले सरयू तट रास मचाये ।
सरद रैन उजियारो प्यारी लागत परम सुहाये ।
तामधि रमत रास रंग भीने प्यारी गरभुज लाये ।।
बाजत पैजनि मधुर मधुर सुर छूम छूम छननन होये ।
'सियाअली' मोहन नटनागर नई नई तान सुनाये ।।

(८१)

रास बिच रसिया रस बरसाये ।
सरजुतीर चांदनी छिटकी तँह रसबीन बजाये ।
चंद्रकलादि अलिन मंडल बिच सोभित दोउ छबि छाये ।।
कबहुँ पिय कबहुं प्यारी जू गावति राग सुहाये ।
कुंडल हलकन बजन नूपुर की 'सियाअली' मन भाये ।।

(८२)

वारूँ कोटिन चन्द आली युगल मुख चन्द पै ।
मोहै मुकुट को लटकन कुंडल की हलकन, छुटी अलकन फन्द ।
तिरछे दृगन की चितवन अजब मनमोहक मुसकन मंद मंद ।।
अंग अग भूषण राजै अमित शशि भ्राजै लखि हिया अनंद ।
'सियाअलो' लखै छबि झीनी रासरस भीनी जिमि अलि मकरंद ।।

(८३)

सुखदाई री अली शरद रतिया ।
यामे रास रमन प्रीतमसंग हिय बिच सुख सरसत अलिया ।
अलिमंडल दीने गलबहिया काह कहँ यह सुख बतिया ।।
पिय मुखचंद सुधा छकि अंखियां बिसरी पलकन की गतिया ।
'सियाअली' पगी रासरग में झुलि सुधि थाकी मतिया ।।

(८४)

प्यारी लागे छयल की छमकन ।
हलत बुलाक श्रवण की कुंडल, तापै डोलै मुकुट की लटकन ।
नृत्यत रसिक अवधेश लाड़िला, नूपुर बाजै छमाछम छननन ।।
नई नई तान सुनावत प्यारो, आली भावै कमर की लचकन ।
'सियाअली' नृत्यत प्यारी संग, वारि जाऊ भुजन की अरुझन ।

(८५)

प्यारीजू तिहारी चंद्रानन पै प्रीतम नयन चकोर भयो ।।
एक पलक टारन नहि चाहत जाहत है भुज अंक लियो ।
तृप्ति न मानत कबहुँ रसिकवर रूपसुधारस पान कियो ।
धन्य धन्य भाग सोहागिन तेरो धनि यह सुख सरसाती हिये ।
'सियाअली' यह स्वाद महारस तेरी कृपा बिन कोन पिये ।।

श्री हनुमान–बधाई

सुनो री सजनी आजु बाजी बधाई ।
प्रगट भये सियापिया के दुलारे, सतजनन सुखदाई ।। सुनो सजनी
मंगल साज सजोरी सजनी चलु घर अंजनी माई ।। सुनो.......
मंगल मुरति को दरशन करि लोचन के फल पाई ।। सुनो... ...
'सियाअली' कपिपति के चरण गहु मिलिहैं सिया रघुराई ।। सुनो०।

(८७)

चलो नाचो री अंजनी अंगना ।
श्रीसियाराम प्रेम की मूरति प्रगटे श्री हनुमत ललना ।। चलो०।।
अब दुख दूर भये सबही को रसआनंद झरत झरना ।। चलो० ।।
सुर नर मुनि सब मगन भये हैं वर्षत सुमन बजत बजना ।। चलो० ।
'सियाअली' कपिपति निवछावरि मागौं प्रेम भक्ति गहना ।। चलो

चौपर

पिय चौपर की बाजी लगाऊँ ।
जो जीतेंगी मम प्यारीजू तो पिय को डरहार बनाऊं ।
करिहैं निज वस में प्रीतम को दासिन में पिय नाम गिनाऊं ।।
जो जीतोगे तुम मनभावन जाचकता से तोहि छुड़ाऊं ।
'सियाअली' सिय प्रेम सुधारस बिन जाचे पिय पान कराऊं ।।

होली रंगीली

प्रीतम रसरंग बहार फागुन आय गई।
अब नित रंग उमंग संग वह नित कुमकुम की मार।
बनि आई अब लालहि तिहारो नित निल की तकरार।
नितहि सखिन संग पकड़ि जाओगे होइहै मन को हमार।
'सियाअली' नितरंग मचैगी तेरे संग दिलदार ।।८९।।

(९०)

नित नित तोरे रंगकी चाट रसिया ना सहबै।
लेबै पकड़ि आज जीवनधन धरि लेबै हिय कोर।
रंगबै खूब श्याम अगन में बंधवै गर सो जोर।
जाने न देबै 'सियाअली कबहू करबै न पलकन ओर।।

(९१)

तुम ऐसो साड़ो लाल नितहि रंग डारत हो।
हा हा करत कहा नहि मानत कौन तिहारो चाल।
जानत हूं पिय रगड़ तिहारो चाहत अपनी हाल।
धीरज धरिये आज रसिकवर करिहौं खूब निहाल।
'सियाअली' छूटन नहि पइहौ जब बान्हौ भुजमाल।

(९२)

यह नई नई ढंग तुम्हार प्रीतम फागुन में।
औचक आय मलत मुख रोड़ी लपटि बना उर हार।
कौन सहै नित लाल तिहारो उरबिच पिचुकन मार।
तापर बोलत अटपट बातैं ठानत हौं रसरार।
'सियाअली' कबहु पड़ि जैहो फन्द मरे दिलदार।।

(९३)

आज छवि कैसी बनी होरी में ऐ दिलदार।
सिर सिंदुर दृगन में अंजन सारी कुसुम रंगदार।
पड़ि गये सखिन के फन्दे चलिये घुंघट मार।।

यह सुंदरि सिरमौर सियाजू आई तेरे द्वार।
लीजिये देखि खोलि पट घुंघर तेरोहि छवि मनुहार।
मुख दिखाइ न्यौछावर दीजै प्यारो गलभुजहार।
'सियाअली' मुख चूमि छयल के बार बार बलिहार॥

(९४)

सम्हल के होरी में रंग डारिये राजकुमार।
जो प्यारे करिहो बरजोरी लइहो कसर निकाल।
गलभुज डोरी बानि लै चलिहौं सियजूक दरबार।
लालन आज लाल करि दइहौ एक न चले तुम्हार।
'सियाअली' रंग बोरि छयल को करिहो गले को हार॥

(९५)

रसिया कस रसिया कस आज रंगे रंग में।
औचक आय गुलाल लगावत मानो अनंग भरे अंग में।
मृदु मुसुकाय करत रस बातें जगनि परत हो नये ढंग में।
'सियाअली' मन भाय तिहारो होइहैं आज सखिन संग में॥

(९६)

रसिया तोहि रसिया तोहि आज रगाऊंगी।
सखन सहित रंग बोरि छयल को लालहिं लाल बनाऊंगी।
यह नित नित की रगड़ तुम्हारी, एकहिं बार छुड़ाऊंगी।
'सियाअली' तोहि पकड़ि सांवरो हिय बिच कैद कराऊंगी॥

(९७)

रंग बरसो आज रसिकवर को।
बड़ो चपल को आज सियाजू लाई पकड़ि जोरावर को।
खूब गुलाल लाल गालनमें प्यारी लगाइय निज कर सो।
मनभाई मनभावन सों करि अति आनंद हिये सरसो।
'सियाअली' ये नित के रगड़ी, राखिय बान्हि भुजन गर सो॥

(९८)

यह जोड़ो नित आनंद रहो।
नित रसरंग केलि सुख छाको मो अंखियन सुख देत रहो।
नित यह फाग भाग मम आवे नित रंग प्रीतम प्यारी लहे।
'सियाअली' आशोष हिये से, मम प्राणन के सर्वस हो॥

(९९)

बिहंसि दृग पिचुकन से रसिया रंग डारत आज ।
तिरछे करि करि उर बिच मारत, रंगत अलिन समाज ।
फाग किधौं अनुराग खेल सखि, करत रसिक सिरताज ।
बरबस आय पैठि उर अयनन, लइ तन मन की लाजी ।
'सियाअली' दृग पिचुका के बदला पइहौ ललो ढिग आज ।।

(१००)

रसिया खेलत हौ यह कैसी अनोखी फाग ।
तिरछे तकनि कियो पिचकारो डारत भरि अनुराग ।
लागत उर बिच आय प्रेमरंग छुटत नही यह दाग ।
तापै हंसन गुलाल उड़ावत बरबस गरवा लाग ।
'सियाअली' अनुराग बढ़ी हो फाग किधौं मेरो भाग ।।

(१०१)

जो रंगि दियो तनमन को बलि जाऊँ रंग खेलनहार ।
सारी मिस सारी रंगि डारी रंग रंगीले यार ।
ऐसी रंग रंगाई रसिया तन मन की न सम्हार ।
हमैं रंगायो हमहुं धरि हिय बिच करिहौ बंद किवार ।
'सियाअलो' अधरामृत रस दै इतहि रहौं बलिहार ।।

(१०२)

बहारैं होली की छतिया से छयल लगि जावो ।
अबिर भरे ये कपोलन के रस चुम्बन मिस दै जावो ।
भरे उरोज मनोज रंग के यहि रंग में रंगि जावो ।
खेलिये फाग अनंग रंग पिय लीजिये अपनो दावा ।
'सियाअली' निज रंग रंगि के अब न जिया तरसावो ।।

(१३)

छयल रस होली में हिय से कबहुं मति जाव ।
जन्म अनेकन से बिछुड़े हौ, अब न अधिक तरसाव ।
डाह करति बैरिनि सौतिनियाँ तिनके मुंह मसि लाव ।
निज छवि में सरसाये रहौ दृग जग दिशि अब न लगाव ।
'सियाअली' सब भाँतिन से पिय अपनेइ रंग रंगाव ।।

(१०४)

रंगा दे रंग में अपने मेरे दिलदार होली में।
दिखा वह अबीर रंग भरे मुखचंद पै छलकै।
छका दे छवि निराली में मेरे दिलदार होली में।
चला दे चश्मकी पिचुकें अनूठे रंग भर भर के।
भिगा दे अंग अंग सारी मेरे दिलदार होली में।
उड़ा दे मन्द मुसकन मिस गुलाल लाल अधरों से।
लगा दे गाल पै मेरे दिलदार होली में।।
पिला दे प्रेम की शर्बत 'सियाअली' को मेरे प्यारे।
मिला ले अंग में अपने मेरे दिलदार होली में।।

(१०५)

छयल कैसी पिचुका चलाई सारी रंग भिजाई।
रंग रंगे दोउ अनंग गे पिय सो नहि परत लखाई।
विकल भये तन प्रान सखी री सो अब कहि नहि जाई।
रसिक रंग कैसी रंगाई।
यह नई रीति रंग खेलन की प्रीतम परत लखाई।
अबिर लगावन मिस गालन पै बरबस हिय लपटाई।
लई सरबस को चुराई।
होरी मिस चोरी रंग बोरी बरजोरी बनि आई।
'सियाअली' मदमस्त रंगीला रस अंग अंग बरसाई।
रहे हिय बीच समाई।।

(१०६)

पिचकारी से भिजाई मोरी नई सारी।
कर पकरी कंचुकि बन्द खोलत लै लै नाम देत गारी।
मलत गुलाल कपोलन ऊपर मुख चूमत लै बलिहारी।
अवध छयलबर जो नहि मानत लोकलाज सबछारी।
'सियाअली' होरी के रसिया नचत नचावत दै तारी।।

(१०७)

दोउ भीने रहो रंग भीने रहो।
यह रंग भीनी छवि अंखियन की प्रीतम नित नित देते रहो।
आप रंगे रंग डारो हमहुँ को हम से भी रंग लेते रहो।
'सियाअली' यह रंग की बधाई मोहि सुख चुम्बन देते रहो॥

(१०८)

रसिया को नारी बनाऊंगी।
करि लहँगा उर माहि कंचुकी चुनरी शीश ओढाऊँगी।
गाल गुलाल दृगन में अंजन बेंदी भाल लगाऊंगी।
'सियाअली' सब तालि बजाकर स्वामिनि निकट नचाऊँगी॥

(१०९)

छके दोऊ रङ्ग रङ्गे नव गात।
खेलि फाग अनुरागन भरि भरि अंश गहे अलसात।
अबीर भरि अलकैं कपोलन अनुपम छबि दरसात।
नींद भरी चितवन चित चोरत मंद मंद मुसुकात।
'सियाअली' यह फाग मुबारक यह रसरंग की रात॥

चैती

तेरो मुख चन्द चकोरवा हो रामा हमरो नयनवाँ।
मुदित होत छिन छिन छवि लखि के ज्यों घन लखि वन मोरवा हो।
पलक ओट कबहू मत होइये ए मेरे दृग के दुरलवा हो।
हँसि हेरनि वै हिय हारो नित बैन सुनो रस बोरवा हो।
'सियाअली' हिय कुंज तिहारे इतही रहे चितचोरवा हो।११०।

(१११)

बिसरत नाहि सुरतिया हो रामा अवध छयल की।
जबसे लखि लखि सामली सूरत कल न परत दिन रतिया हो रामा।
वह चितवन वह मंद हँसनि लखि वह बोलनि रसबतिया हो रामा।

वह विहरन सरयू तट केरी बह चंचल चित गतिया हो रामा।
'सियाअली' अवधेश सांवरो कसकति हैं बिच छतिया हो रामा॥

(११२)

श्याम दृगन चित चोरवा हो रामा चित हरि लै गये।
जात रही सरयू तट सजनी वह आवत यही ओरवा हो रामा।
हँसि हँसि के मृदु वैन सुना के कर तिरछे दृग कोरवा हो रामा।
तबसे उर बिच उठत सखी री छिन छिन नैन मरोरवा हो रामा।
'सियाअली' अवधेश लड़िलो पैठ हिए वर जोड़वा हो रामा।

(११३)

अवध छयल के नयनवां हो रामा कहर करै री।
मतवारे कजरारे रतनारे हेरन हिय के हरनवां हो रामा।
जेहि दिशि चोट करत है हँसि हँसि के राखत नहि परनवा हो रामा।
चैन हिय नहि परत सखी री भावत नाहि भवनवां हो रामा।
'सियाअली' मन श्याम संग लागी मानत नाहि कहनवां हो रामा॥

(११४)

बिसरत नाहि सुरतिया हो रामा, अवध छयल को।
जब ते लखी सखि सांवलि सूरति कल न परे दिन रतिया॥ हो रामा॥
वह चितवनि वह मंद हँसनि सखि वह बोलनि रसबतिया॥ हो० ॥
वह विहरनि सरयू तट केरी वह चित चंचल गतिया॥ हो० ॥
'सियाअली' अवधेश सांवरो कसकत हैं नित छतिया॥ हो रामा॥

(११५)

तेरे मुख चन्द चकोरवा हो रामा, तरसे नयनवां॥
मुदित होत छिन छिन छबि लखि के ज्यों धन लखि के मोरवा।हो०॥
पलक ओट कबहूं मति होइये, मेरे दृग के दुलरुवा॥ हो०॥
हँसि हेरनि पर हिय हारौं नित, बैन सुनत रस बोरवा॥ हो०॥
'सियाअली' हिय कुंज तिहारो, इतहिं रहो चितचोरवा॥ हो रामा॥

(११६)

नीकी लागे अवध नगरिया हो रामा।
अवध धाम रवि शशि द्युति निंदनी सुंदर कनक अटरिया हो रामा।
वन प्रमोद सरयू तट कुंजन फुलन भवर गुजरिया हो रामा।
जनकलली संग रामकुमारजू निरतत सखिन हजरिया हो रामा।
'सियाअली' युगल माधुरी निसदिन नयन कजरिया हो रामा॥

मन—प्रबोध

जो मन प्रेम मधुप बनि जाते।
तो तुम श्री प्रीतम प्यारो पद पंकज जाय लुभाते।
पाय प्रेम रस होइ मतबारी प्रीतम गुनगन गाते।
रहिते यहि आनन्द मगन नित भव दुःख से छूटि जाते।
'सियाअली' प्राणेश तिहारो तूँ उनकी कहलाते॥११७॥१

(११८)

मन पिय पद नूपुर बनि जाओ।
अति कोमल पद पंकज प्यारो गहि तिनको उर लाओ।
कोटि मदन पंकज होय लाजै तेहि संग तुम छवि पावो।
जब तुम नाथ चलन मग चाहें तब मृदु बैन सुनाओ।
'सियाअली' मन भावन तेरे तूं उन के मन भावो॥२॥

(११९)

जो मन कुंज सुमन तुम होते।
जहाँ आवे नित प्राण अधारो तोहि तोरि तोहि लेते।
कर तोहि माल गले निज डारे तुहूं अंक भरि लेते।

नित हृदयेश हृदय से लगि लगि अति आनन्द उर भरते ।
'सियाअली' मन भाय तिहारो जो मनभावन करते ॥३॥

(१२०)

जो मन प्रीतम रंग रंगि जाते ।
तो दूजो रंग चढ़त न तुम पै जहँ तहँ प्यारो लखाते ।
सुन्दर मुख सरोज के ऊपर दृग को भ्रमरि बनाते ।
लै शोभा रसपान करहु नित कबहूँ नाहि अघाते ।
'सियाअली' रंगि जाबो प्रेम रग प्रिय तेरे होइ जाते ॥४॥

(१२१)

हे मन लहहू अब आनन्द ।
बहुत दिनन पर हे चकोरि मिले तोहि युग चन्द ।
भेंटि लीजै लागि हृदय से अंक भरि सुख कन्द ।
राखि लीजै हिय गगन में डारि प्रेम की फन्द ।
'सियाअली' मन प्राण बारो निरखि मुसकनि मन्द ॥५॥

(१२२)

मन प्रीतम बिनु कैसे रहिहौ ।
तोहि बुलाय दियौ सुख प्यारो सो कैसे बिसरइहौ ।
शोभा धाम प्राण प्यारे को अब कहँ देखत पैइहौ ।
प्रीति निबाहत मीन वारि से तुम तो झूठ कहैहौ ।
'सियाअली' यह दर्द हिया की अब तुम कासे कहिहौ ॥६॥

(१२३)

मन साँचो सुख की चाह करो ।
सुख के धाम प्राण जीवन से मिलने को उत्साह करो ।
छिन छिन प्रति यह श्याम सुन्दर की मृदु मूरति उर माहि धरो ।
कोटि सहो उपहास जगत की तनि दिशि कबहुं न कान करो ।
'सियाअली' होहि बनै को यासों कछु नहि काज करो ॥७॥

(१२४)

मन भूलि परी मति या जग में।
देखत समुझत दुख दूनो पूरो फजिहत या मग में।
पसनेहुँ चाह न कीजिए इनकी मति परिए इनको डग में।
रहिए अपने साँचे सनेही श्रीअवधेश लला संग में।
'सियाअली' अपने तन मन को रगे रहो नहीं रंग में ।।८।।

(१२५)

मन तोहि केहि विधि से समुझावो।
मानत नाहि कही तुम मेरी झूठे हो पथ धावो।
सुख बदले दुख देत तुम्हें जो ताको नाहि छुड़ावो।
लियो ठगाय सवति वैरिन तोहि मति तेहि संग भुलावो।
झूठ को साँच बनाय दिखावति प्रिय सो विमुख करायो।
जो तोहि चाह पिया मिलने की सवति गलि मति जावो।
'सियाअली' गहो प्रेम गली को तुरतहिं प्रीतम पावो ।।९।।

नाम–उपदेश

हे मन नामधन चित धरहु।
बहुत जन्म दरिद्रता बस माँगी भिक्षा मरहु।
प्रभु कृपा से पाय यह धन यत्न उर बिच करहु।
लगि है भव चोर चहुँ दिशि देखु तिनसे डरहु।
ध्यान रूप किबाड़ सोकड़ि प्रेम ताला भरहु।
देहु तजि तुम मोह निद्रा सजग निशदिन रहहु।
'सियाअली' पइहो अमित सुख जो कहे अनुसरहु ।१२६।।

(१२७)

हे मन भजहु प्रीतम नाम।
स्वप्न सुख के हेतु सठ तू लागि रहेव वसु याम।
याहि ते बहु योनि भ्रम्यो पायो नाहि आराम।
हे कृपा के ऐन प्यारो नाम गुरु के धाम।
'सियाअली' जीवन तिहारो लहहु अब विश्राम ।।

(१२८)

हे मन नाम अमृत पियहु ।
देहु तजि अब विषय रस जेहि पान करि नित मरहु ।
नाम अमृत पान करिके अमर होइ सुख लहहु ।
तोरि के भव जाल मन तू शरण प्रभु की गहहु ।
'सियाअली' सियाराम सीताराम निश दिन करहु ॥

विनय

बहुरि हम तुम कब एक बनै ।
जीव बनाय विलग कियो जब भ्रमत अनेक क्लेश सनै ।
दियो जगाय कृपा करि जो अब तो पिय विनती मोर सुनै ।
हौं तेरी तुम मोर सबै विधि अब विछुड़े नहि रहत बनै ।
'सियाअलि' दिन कैसे बिताऊँ तुमहि कहौ अब कैसे मनै ॥१२९॥

(१३०)

तरसत हौं दिन रैन नैन भरि कबहूँ देखन पावेंगे ।
गल भुज डारि निहारि छैल छवि निज कर अलक सुधारेंगे ।
हंसि हेरनि की कठिन चोट सहि हठि अधरा धर लावेंगे ।
होय निशंक अंक भरि प्रीतम हाय हिया से लगावेंगे ।
'सियाअली' अपनो सर्वस दै उन्हें भी अपना बनावेंगे ॥

(१३१)

छयल तेरेहि निवाहे बनै ।
हौं अति अज्ञ प्रीति की रीति जानति नाहिं बनाये बनै ।
मिलनि मनोहर कहर करत उर अब प्रीतम उर लाये बनै ।
बनत उपाय नहिं कछु हमसे सब विधि तेरे बनाये बनै ।
'सियाअली' के परम सनेही अब न हमहि बिसराये बनै ॥

(१३२)

मन माणिक प्रीतम ही लायक भूलेहु अनत न दीजै आली ।
जौं परि जाय पराये हाथन तो सर्वस सुख छीजै आली ।
यह चंचल विषयिन संग चाहत इन्हैं न कबहुँ पतीजै आली ।
खबरदार रहिये इनसे नित प्रीतमही दिसि कीजै आली ।
'सियाअली' जो जो चाहत मन सो प्रभुही सो लीजै आली ॥

(१३३)

जो मन चाहत लोभ संग प्रिय छविपर ललचाव।
जो चाहत हो काम सुख तौ पियहिय लगि जाव।
क्रोध चहों तो मान करि रूठो प्रीतम संग।
खबरदार काहू समय रंगियो न दूजो रंग।
'सियाअली' सब भाव से प्रीतम ही को देख।
जो चाहत हो सांच सुख नित देखहु यह लेख॥

रेखता

दिलवर तुम तो हमारे हो हम तेरे हैं या नहीं।
मेरे आँखन के तारे हो हम तेरे हैं या नहीं।
हम तो पतित पावन सुनि के शरण लई।
मेरी हालत तुम्हारे तक पहुँची है या नहीं।
हमने मन प्राण भेजी तुम को सोगात में।
सो मेहर की नजर से अंगिकार है या नहीं।
टुक हसकर के सुना दीजिये प्यारे जू मीठी वैन।
करती हूं आस मिलने की आवोगे या नहीं।
'सियाअली' याद में तेरे रहती है रात दिन।
यह रिस्ता जो मुहब्बत का मानोगे या नहीं॥१३४॥

(१३५)

हियरा तुम्हीं बसते हो आखों में तुम्हीं।
मेरे दिल में लुभाकर तरसाते हो तुम्हीं।
हम हैं दीन प्यारे अधमाधम तो हैं सही।
पतित पावन व दयामय कहलाते हो तुम्हीं।
ऐसी तो दोस्तारी कहीं देखी न सुनी।
रहकर के दिल के अन्दर टुक मिलते हो ना तुम्हीं।
'सियाअली' तो दयामय जानकर तुम से है फँसी।
पर निठुराई को धर को दुख लाते हो तुम्हीं॥

(१३६)

टुक दिखा जा मन्द मुसुकन ऐ हमार प्राणधन ।
हौं तरसती श्यामघन तेरे छयल छवि बुन्द की ।
टुक बरस जा आय हम पै ऐ हमारे प्राणधन ।
क्या मजा देती है तेरे जुलुम जुल्फें जाल की ।
टुक फंसा जा मन को उसमें ऐ हमारे प्राणधन ।
बेरहम फावै नहीं प्यारे दयामय नाम पै ।
टुक बुझा जा प्यास मेरी ऐ हमारे प्राणधन ।
'सियाअली' प्यारे जरा विनती मेरी सुन लीजिये ।
टुक लगा जा प्रेम डोरी ऐ हमारे प्राणधन ।।

(१३७)

लागी तोंसे नेहिया नाहीं छूटी ।
नेही नयनमां कहो नहि माने बरबस मुख छवि लूटी ।
कानि गई कुल की सबहीं विधि नयन नयन जब जूटी ।
'सियाअली' दृग छाके रहे नित पियत रूप रस बूटी ।।

(१३८)

सांवलिया मैं तोरे रंग रंग गई रे ।
जहाँ देखौं तहाँ श्याम सुन्दर वर तन मन ऐसो पगी गई रे ।
जो चाहे सो कहे किन कोई अब तो लगन तोके लागी गई रे ।
'सियाअलि' बेदरदी तेरी मृदु मुसुकन पै ठगी गई रे ।।

(१३९)

दृगन सों काहे छिपात हौ प्यारे ।
हिय से नितही आय मिलत हौ होन न चाहत न्यारे ।
कौन चूक पिय इन नैनन की जो तुम याहि बिसारे ।
ए तो तुम को निश दिन चाहत हौ तुम याको दुलारे ।
'सियाअली' समदर्शी कहत सब क्यो द्वै भाँति तिहारे ।।

(१४०)

नेही कहा के निठुर जनि हूजे ।
लगन लगी तेरी चरणन में कर गहो प्यार निबाहि सो लीजै ।
हौं तो निबल सबल हौ प्रीतम मोहि दिशि हेरि कृपाबल दीजै ।
'सियाअली' के भव बन्धन से लीजै छुड़ाय अपनो भव कीजै ।।

गजल

(१४१)

क्यों किया दिलदारी हम से जो निठुर बनना ही था।
तुरत दै देते जबावै जो निठुर बनना ही था।
हम तरफते हैं सजन तुमने खबर लीन्हीं नहीं।
प्राण लै लेते उसी दम जो जखम करना ही था।
नेह की फाँसी गले में डालकर बेकल किया।
हाय निरमोही तुम्हीं पै आय हमें मरना ही था।
'सियाअली' प्रीतम तुम्हारी बेरहमी जाना नहीं।
हमको तेरे इश्क की दरियाव में बहना ही था ॥१४१॥

दादरा

तेरी बाँकी छटा नित देखा करें।
नई नई यह प्यारी छवि में छिन छिन अति मन छका करें।
दिल की दरद कहानी तुम से रात दिन लेखा करैं।
'सियाअली' मृदु हँसि हेरन रस प्यासी दृगन से चखा करें ॥१४२॥

(१४३)

पलक तोहि परम सयानी जानी।
नई नई छवि छिन छिनहि बटोरति धरति दृगन बिच आनी।
लै छवि मूरति अति आतुर ह्वै पुनि खोलति ललचानी।
पकरि जाति जब हँसि हेरनि से भूलति सबै सयानी।
'सियाअली' बस चलत न एकहु बाँधत मृदु मुसुकानी ॥

(१४४)

नैन में श्यामली छवि छाई।
मन उलझो वहि जुलुफ जाल में सुलझत ना सुरझाई।
श्रवण छकी सुनि सुनि मृदु बोलनि और न कछु सुहाई।
हिय अरु प्राण प्राणप्रिय को लै निशदिन रहति लगाई।
'सियाअली' सब सब अंग अंग में प्यारो भवन बनाई ॥

(१४५)

रसिया बिलसो मोरे हिय सेजिया ।
अति कोमल सजि प्रेम सुमन सों उमंग उरोज लगी तकिया ॥
प्यारी पिय रस रंग करो मिलि आय गई रस की रतिया ।
'सियाअली' पिय रस रजनी भरि लाय लगाय रहूँ छतिया ॥

(१४६)

तोहि राखों पियरवा मैं केहि विधि सों ।
दृग भरि राखों हिया तरसत है हिय बिच राखों नयन तरसे ।
एकहु भाँति धीर नहिं आवत प्यारे बताओ मिलूँ कैसे ॥
दृग से दृगन मिलाय सांवरो हिय से हिय लगि गर गरसे ।
'सियाअली' यहि भाँति मिलो जब तरस मिटे अंग अंग परसे ॥

(१४७)

नीके रहो मेरे प्यारा बने रहो ।
प्यारी संग आनन्द करो नित जीवन प्राण हमारा बने रहो ॥
जो न मिलो तो तेरी खुशी है तुम सुख से सुख सारा बने रहौ ।
दूरहिं से सुनि सुनि सुख पावौं रहत हौं ताहि सहारा बने रहौं ॥

(१४८)

प्रिय लागत हौ मोरे प्राणन ते ।
एक पलक न्यारे न करो कभी लागे रहो पिय मो उर ते ।
प्रीतम तो सबहीं प्रिय लागत लगत प्रीत कुरीत जोइ करते ॥
निठुर बने भी मोहि प्रिय लागौ तोरी खुशी जो यही हम ते ।
'सियाअली आनन्द रहौ दोउ मोहि प्रिय हौ सबही विधि ही ते ॥

पशुओं में वह खेलता है पक्षियों में कूकता ।
डालियों में फूलता वह मेरा प्यारा रंग भरा ॥

(१४९)

जाने देहौं ना प्रिय को हिय बीच बसैहौं ।
पलकहु अपनो मन भावन को ओटैं करिहौं ना ॥
भरिहौं दृग प्रीतम छवि रस से केहु दिशि तकिहौं ना ।
निशदिन हिय से लगाय 'सियाअली' न्यारो होइहौं ना ॥

(१५०)

मन को हरे व मनही पकरि गये मेरो मैना।
तोहि पायो हियवा में मेरो मैना।
प्यारो है मम प्यार पलो अब मेरो मैना।
रहो प्रीति पिंजरवा में मेरो मैना।
मीठी बैन सुनत चुम्बन देव मेरो मैना।
लगने देव अधरवा में तेरो मैना।
"सियाअली' जाने नहिं दैहो मेरा मैना॥

गजल

जिस तरफ मैं देखौं तहाँ मेरा प्यारा रंग भरा।
हँस रहा देखो खड़ा वह मेरा प्यारा रंग भरा।
वह जमी और आसमां में और चारों तरफ से।
आ रहा मेरी नजर में मेरा प्यारा रंग भरा॥
वह गुरु पितु मातु बन के पाला मुझको प्यार से।
यह हित् सब बन्धु जन में मेरा प्यारा रंग भरा।
नेह की तसवीर जग में है जहाँ तक 'सियाअली'।
सबसे छाया वह दुलारा मेरा प्यारा रंग भरा॥१५१॥

(१५२)

मेरे आँखों से प्यारा कैसे हटोगे।
जहाँ जावो संग ये दौड़ि जावैं होने न दइहौं न्यारा।
जहाँ छिपोगे संग ये भी छिपेगी देकर पलक किनारा।
बच न पइहौ नेही नयन से 'सियाअली' के दुलारा॥

(१५३)

अवध पिया तोसे लागी हमारी लगन।
उतते आई मैं धाई दरश को डारे हसन को फसन।
अब तो और कछु नहिं भावै चाहौं हरदम मिलन।
'सियाअली' ऐसी लगन लगा के कीजै हिय में सदन॥

(१५४)

नजर मिलौनी तोसे बिसरे नहि छिन छन।
मन्द मन्द मुसुकान माधुरी वह तिरछे दृग कोर रे।
घुंघरारी काली काली जुलुफिया फाँस लियो मन मोर रे।
'सियाअली' अवधेश सांवरो ऐसो कठिन चित चोर रे।।

(१५५)

हरि लियो मन मोर तू तो छयल हँसि हँसि के।
तिरछी तकनि की चोटें करि दियो बरजोर रे।
मीठी मीठी बैन सुना के मोहि लियो चितचोर रे।
छल बल 'सियाअली' करके दियो रसबोर रे।।

(१५६)

मिलाय डारी आज नैना से नैना।
छिन छिन वहि श्याम रंग में तन मन अपनो रंगाय डारी रे।
घुघरारी उन जुल्फों में बरबस मन को फंसाय डारी रे।
'सियाअली' इनकी छवि ऊपर आज सखी सरवस डारी रे।।

(१५७)

निहारे बिनु ना माने नेही नयनवां।
जब देखौं सरयू तट कुंजन बिहरत श्याम सुजनवाँ।
शिर पै ताज श्रवण कुण्डल छवि घुघरारे जुलुफनवाँ।
यद्यपि चोट सहत चितवन की वेधत मृदु मुसुकनवाँ।
'सियाअली' दृग जाय फँसे अब मानत नाहि कहनवां।।

(१५८)

नजरिया मिलाय जा बांका छयलवा।
नेही नयन बिच अनुपम छवि की नजरिया लगाए जा।
मंद मंद मुसुकान हिया से लहरिया उठाए जा।
'सियाअली' नित नित मिलने की डगरिया बताए जा।।

(१५९)

बसो किन आंखिन बीच हमारो।
श्री अवधेश कुमार सांवरो कोटि काम छवि वारो।
शोभाधाम धाम करू हिय बिच यह उर ऐन तिहारो।
'सियाअली' निज चरण भक्ति वर दीजे राज दुलारो।।

(१६०)

दिल में बसो दिलवर तू आँखों में समा जाओ।
यह प्यारी रूप रस की टुक टुक आकर पिला जाओ।
हँस हँस प्राणहर के चितवन की चोट करके।
मन भावन मेरे मन जुलफों में फंसा जाओ।
तूँ जीवन के अधारे मेरे आँखों के तारे।
मन मुरझाय हमारे हिलमिल के खिला जाओ।
निठुराई को न धारो 'सियाअली' के दुलारे।
तन मन धन तुम पै वारों छवि अब तो दिखा जाओ॥

(१६१)

निठुराई लला तोरी देखौं सही।
मम प्यारी सों सब सुख पावत मोको परवश छोड़े यहीं।
जाकी धन लै सब रस विलसत ताकी दिशि कस हेरौ नहीं।
प्रीतम यह अनरीत तुम्हारो एक न चलिहैं मानो कहीं।
लै लइहौं अपनी सिया स्वामिनी कोटि विनय करि पैहो नहीं।
न तो बुलाय 'सियाअली' अब बिलग करै को जब हिय सरसात॥

(१६२)

लागे तोसे जिय मोर रे अवधेश छयलवा।
बिनु देखे छिन कल न परत है सिय दुलहा चितचोर रे।
कसकत है दिन रैन हिया बिच तिरछी चितवन कोर रे।
'सियाअली' अब तो जोवन धन सब विधि से भई तोर रे॥

(१६३)

मारि दई रे मोहि छैला नजरिया।
वन प्रमोद में आय अचानक गेंद बढ़ावत ऐसो रगरिया।
चंचल नैना तकनि तिरछे करि दई मुसकन की फँसरिया।
राजकुमार वही नहि मानत आली री मोसे करि बरजोरिया।
'सियाअली' पिया घूंघट खोली बिक गई रे मैं छवि की बजरिया॥

(१६४)

लता मैंने किया तोसे नैना लगाया।
अब मिलने को तरसावत हौ निठुर हौ पिया, तोसे नैना लगाया ॥
देखे बिनु यह रूप माधुरी ना माने जिया, तोसे नैना लगाया।
'सियाअली' सरबस निरमोही तुम्हीं को दिया, तोसे नैना लगाया ॥

(१६५)

लगी री गुइयाँ सियाबर से मोरी प्रीति।
अब तो यह छूटन की नाहीं ल तन मन को जीत।
नित उठि सिय को पूजि मनइहौं बिछुड़ै ना जीवन मीत ॥
जो चाहै सो कहै अब कोई नैना लड़ैहौं नीत।
'सियाअली' उनही लखि जीहौं गइहौं इनहीं के गीत ॥

दुलहा के पद

सखी मो मनको भाये छयल बनरा बनि आये।
जैसी मेरी प्यारी बनी छबि तैसीही छबि छाए।
राजत है मण्डप तर दोउ रतिपति कोटि लजाए।
हेरतही हिय आय बसत है चित्त को लेत चुराये।
'सियाअली' बना जाने न पैहो अब उर अंगन आये ॥१६६॥

(१६७)

बनरा छबि छाय रही नैनन में।
शिरपै मोर श्रवण कुंडल छबि चितवन तिरछै सैनन में।
बिहँसि बिहँसि हिय हारत सखीरी बोलत एक रस बैनन में।
अवध बने दिलदार बसो अब 'सियाअली' उर ऐनन में ॥

दोहा

देखन को दिलदार छबि गई सजनी मैं धाय।
नयन डगर ह्वै सांवरो, बसे हिया बिच आय ॥१६८॥

(१६९)

मुझे छवि की छटा में छकाया करो।
मुकुट में मन को लगाया सांवरो कुंडल में कैद कराया करो।
दिल से तिल भर अलग करो जनि अंजन में अपनाया करो।
'सियाअली' अधरामृत को पिय छिन छिन पान कराया करो॥

(१७०)

नैनन बिच प्यारा बसाऊँ तुम्हें।
जो तोहि पाऊँ श्याम सुन्दर वर ललकि हिया से लगाऊँ तुम्हें।
पलक ओट पिय होत न दैहौं प्रेम के जाल फँसाऊँ तुम्हें।
'सियाअली' सुनो प्राण के सरबस हिय का हार बनाऊँ तुम्हें॥

(१७१)

सखी प्यारी सुरतिया यार की।
बिन देखे वह सामरी सूरत अवध छयल दिलदार की।
कहर करत हिय हँसि हेरनि तकि मानो जखम तरवार की।
'सियाअली' छवि टुक दिखला दे सखि हमरे उर हार की॥

(१७२)

अब मति जाओ मेरो प्यारा हियरवा से।
इतही रहो नित मोर दुलारो मृदु मुसुकन रस मोको पिलाओ।
हिय कुंजन विहरो प्यारी संग सो छवि छिन छिन मोहि दरसाओ।
भाव भरे रस भोग लगैहौं प्रेम के विरवा मैं जोरि के खिलाओ।
जब चाहौ रसकेल सेज सुख फूल सेजिया मैं तुरत बन जाओ।
'सियाअलो' निरखों भरि नैनन दोउ रसिया मिल रस बरसाओ॥

कवित्त

सांवरो सलोनो मुसकान भरे नैनन से सैन को चलाए
मोपे चोट किये जात हैं।
पीर ना सम्हारत मन फेर फेर चोट चाहत चोट के दबाए
सखी अति ही लखात है।
कैसी यह चोट ओट होत ई ना भावत चित नहां जात आली
अकथ यह बात है।
ऐसी अनोखी छबि कैसी लखी 'सियाअली' बार बार।
देखी अनदेखी होत जात है ॥१७३॥

(१७४)

कोई कहे कहीं झूलन है नहीं, कोई कहै यह झूलन जाती।
कोई कहै यह सैर चहै अरु, झूलन देखन को नहिं जाती ॥
जाति को हाल जातिहिं जानति और कहा कोई जाने बिजाती।
'सियाअली' मन प्रीतम के ढिग काहू की बात न कान में जाती ॥

(१७५)

नैंन फुटे जग देखवो चाहै जो कान फटे जग बैन सुनै जो।
हीय फटै जग भावै जबै अरु जीभ कटै जग बैन कहै जो ॥
तन मन धन जरि जाहु सबै जो जग के दिशि लागै जबै जो।
'सियाअली' सबही बन जाहु जबै पिय के मिलबेक चलै जो ॥

(१७६)

सब नाते अपने ही से लगाओ।
धर्म कर्म सब परत एकहु नहिं ताते तोहि गोहरावो।
बनि पितु मातु धोय हिय की मल अपना प्यार पलाओ ॥
गुरु बनि के अज्ञान हरो मम सांची पन्थ दिखाओ।
बन्धु होय रक्षा मम कीजे भव बन्धन से छुड़ाओ ॥
प्रीतम बनि अंग अंग रमो पिय प्रेम सुधारस प्यावो।
'सियाअली' झूठे सुख दुख से छोड़ि हमहि अपनाओ ॥

दोहा

राजत दोऊ कुंज में अरुझ क्या छवि देत।
मन निशंक अंक अंक भरि मिल के दोऊ अचेत ॥
जुग मैना को लाय मन हिय पिंजरा में राख।
सुनि सुनि मधुरे बैन को मुख चुम्बत रस चाख ॥
हे मैना जन जाहु कहुँ एसो सुख सरसाय।
प्यार पिंजरन में तुम्हें राखों हिय से लाय ॥
प्यारे हौ तो प्यार ते प्रीतम प्रीति बढ़ाय।
मैना बनि मन लेहु पिय चुम्बन हेतु अघाय ॥
और कछू चाहौं नहीं 'सियाअली' यह हेतु।
बसो युगल को हृदय में प्यार हमारो जेतु ॥१७७॥

(१७८)

चित चाहत ऐसो निशि वासर अपनो प्रीतम प्राण निहारूँ।
और ठौर चितवहुँ नहिं भूलेहुँ छिन छिन पिय के अलक सम्हारूँ।
पियत रहूँ रस युगल माधुरी हँसि हेरन पै तन मन हारूँ।
'सियाअली' हिय लाय प्राण धन जग नातो करि दूरि बिसारूँ ॥

(१७९)

प्यारी तो पै लटकि रहे रसिया।
जैसे वसन लसत अंग न में यों प्यारो गर गसिया।
छिन छिन अधरामृत को लपकत कबहुँ न जात सिय पिया ॥
तेरे चरण सरोज के मधुकर सहित होत विवसिया।
'सियाअली' हिय नैन जुड़ावत लखि छिन छिन की रहसिया ॥

(१८०)

निज प्यारन में पगे रहो दोऊ।
अरुझे रहो सुरझो कबहुँ ना अरुझावो हम कोऊ।
अधर सुधा रस पियो पिआवो टुक जूठन मोहि देऊ।
'सियाअली' मम प्राण के सरवस प्यार हमारहिं लेऊ ॥

(१८१)

अजब मधुकर रस चाखनहार।
प्यारी पद पंकज में देखो लागत बारम्बार।
परम प्रबीन दीन होइ सजनी पुनि पुनि मानत हार॥
कृपा करिए यह दीन पै सियजू प्याइय रस की प्यार।
लेहु बसाय उरोज कमल पर मधुप सनेही यार॥
भये विवस आधीन तिहारे भूले सब हुशियार।
ऐसे गरीब तेरे जाचक पै 'सियाअली' बलिहार॥

(१८२)

केहि अंगन में बिकाय गये रसिया।
एक से एक भरी छवि सबमें तन मन गमाय जिये रसिया।
की अटके प्रिय मृदु बोलनि में की नैनन में समाय जिये रसिया।
की उरोज बीच फंसे सिय की हियहार बनाय गये रसिया॥
प्यारी छवि बन बीच परे प्रिया की कुंजन में भुलाय गये रसिया।
'सियाअली' मुख चूमि लखै छवि कोनी छवि में छकाय गये रसिया।

(१८३)

केहि अंगन में चुराय गये रसिया।
हेरि थकी पाऊँ नहिं पिय मन कौने रस में लगाय लये रसिया।
कहा करी तुमने प्यारो जू छवि जालन में बसाय लये रसिया॥
ये तो सहज ही है वस तेरे कोनी चूक बँधाय लये रसिया।
'सियाअली' बलि जाऊँ रंगीली कोनो रंग में रंगाय लये रसिया॥

(१८३)

सियाप्यारी सलोनी हमारी अरी।
इन छवि छाके राज कुमरवर काहे नैन मन हारी अरी॥
सियामुख चन्द्र चकोर सामरो रहत निहारि बिहारि अरी।
पलक ओट चाहत नहिं प्यारो रहैं अंश भुज धारी अरी॥
'सियाअली' आलिन के ऊपर बरसत नैन झूम सावन री।
प्यासी त्यों या रस कों पीवत प्राण बिसारी अरी॥

(१८४)

रसीले नयनमा प्यारी जू के।
रतनारो प्यारी कजरारी मनहारी ये सुखद चितनवाँ।
सखी ये लोचन पिय मनमोहन दृग जीवन आनन्द भवनवाँ।
'सियाअली' आलिन के ऊपर बरसत नैन कृपा सावनवाँ॥

(१८५)

अवधपिया सखि बड़ो रूप गुमानी।
अकड़े रहत रूप मदमाते तापे मृदु. मुसक्यानी।
करत शिकार अलिन के उपर मारत दृग सरतानी।
'सिआअली' जानकीवल्लभ ए छलिया बड़ो सयानी॥

(१८६)

राखे ये दोउ मो प्राणहुं के प्राण।
देखहु कनक भवन सिंहासन दोउन की अरुझान।
नेह भरी चितवनि पर सोहत मन्द मन्द मुसुकान।
याहि रस में छाकी सब अलियाँ हिय न धरत कछु आन।
'सियाअली' नित नव सुख पावौं जीव धन सुख दान॥

(१८७)

प्यारी प्यार पगे प्यारी जू प्यारी प्यारो उर लगि सोहैं।
प्यारी दृगन बसे प्रीतम पिय प्यारो प्यारी छवि पर मोहैं।
ललकि कपोल मिलाय रहैं दोउ लकर दरपन में मुख जोहैं।
दोउ मुखचन्द निहारि परस्पर रस बतिया हँसेहैं।
'सियाअली' दोउ रसमुरति लखि अँखियन की तापन सोहैं॥

(१८८)

प्यारो करत श्रृंगार प्रिया को प्यारी निज कर पियहिं सँवारैं।
पिय निज रूप देत प्यारी को प्यारी निज छबि देत पियारैं।
लै चन्द्रिका धरति पिय शिर पै प्यारी लेकर मुकुट सुधारैं।
श्याम बने सिय सोय बनी पिय यह छबि सखियन चकित निहारे।
'सियाअली' सांवरी मुख चूमति प्राणप्रिया भये गौर तिहारे॥

(१८९)

बसे तेरे सब अंगन में श्याम।
ये री रूप की राशि नवेली सियजू सुखमाधाम॥
अलकै बनि प्रिय लटकि कपोलन चूम्बत रूप ललाम।
अंजन मिस आँखन में राजत पुललिन बिच विश्राम॥
सारी बनि सोहै अंग पै लसि रहे आठो याम।
'सियाअली' बलि बलि अलबेली भल बस कीनो श्याम॥

(१९०)

बिहँसि दोउ हेरन में हिय लेत।
प्रेमसंदेश हाय हिय की दोउ चितवन में कहि देत।
अंश गहे मुखचंद निहारत छिन छिन होत अचेत॥
डुबे छवि सागर नागर दोउ मानहु मेह निकेत।
'सियाअली' दोउ छविसागर विच आलो लहरिया लेत॥

(१९१)

दुलहा बाँकी दुलहिन तुम पायेन मैं बारो जाऊ।
धन्य धन्य तुम अवधलाडिलो धनि धनि भाग्य सुहायेब।
त्रिभुवन की सुंदरो सियाजू तेरे संग छवि छायेब॥
उमा रमा शारदा शचि रति सिय समता नहि पायेब।
'सियाअली' बलीहार दुलहजी जो सियाजू अपनायेब॥

(१९२)

सखी मेरे जीवनधन ये जोड़ी।
श्री अवधेश कुमार लाड़िलो श्री मिथिलेश किशोरी।
पलक ओट कबहुँ ना होवे मैं श्यामल ये गोरी।
उगे रहैं युगचंद सदा य नेही नयन चकोरी।
'सियाअली' दृग छाके रह नित रूप सुधा रस बोरी॥

विनय प्रियाजू के प्रति

कब मिलिहैं पदपंकज प्यारी।
सुषमा ऐन प्राण की सर्वस श्री निमिराज दुलारी।
एक बार दृग कोर इतै करु हे दीनन हितकारी॥
यद्यपि अधम तउ तेरेहि हौं प्रनबस तुमहि बिसारी।
'सियाअली' तोहि कैसे मिलिए बिन प्रिय कृपा तुम्हारी॥१९३॥

(१९४)

कबहुं प्रिया सुधि लीजिये मोरी।
यद्यपि दीन मलीन अधम अति हौं कलिमल सो घेरी।
तदपि आस हिय बिच राखौं कृपा बिलोकनि तेरी।
अधम उधारन नाम सुनी मैं याही लते टेरी।
'सियाअली' आधार तुमहीं हो हूं चरणन की चेरी॥

(१९५)

कबहुं कृपा करि आपन करिए।
हे श्री स्वामिनी जनदुखहारिनि दया दीन दिशि धरिये।
निज कृत भोग बहुत दुख पावौं बिनु तेरे किमि तरियें॥
एक बार हे दीनवत्सले चितै दीन दुख हरिए।
तृषित 'सियाअली' निसदिन हेरति बरसि कृपा जल भरिए॥

(१९६)

निश दिन तेरे ही आस रहति हौं।
हे प्रीतम चकोर को चन्दनि कृपा बिलोकनि तेरी चहति हौं।
हूं जाचक बहुंदिशि ते फिरि के आय तिहारोइ द्वार गहति हौं॥
हो तुम प्रिया प्रेमधन स्वामिनी करिये अजाचक टेरि कहति हौं।
'सियाअली' प्रीतम रस मांगति दानि शिरोमनि तोहि सुनति हौं॥

विनय प्रीतमजू के प्रति

कबहुं चितइहौ राजिवलोचन।
जीवने यह जीवति हारो राखिए शरण जानि अपनो जन।
बहुत अघो लखो यहि चितवन देर करो अब न सकोचन॥
की अब मोर नाथ नहिं जानेव की भुलेव प्यारो अपनो पन।
'सियाअली' तव नाम दयानिधि कृपा बिलोकिय शोचविमोचन।१९७।

(१९८)

कबहु हेरिय यही ओर करुणानिधे
जानि जन आपनी कृपा उर कीजिये।
बुड़त भवसिन्धु अवलम्ब नहिं और मोहि
निरखि जन दीन प्रभ बाँह गहि लीजिए।
तोहि बिसराय भव दुख बहुत सहत हैं
छमिए मम नाथ अब दयाचित कीजिए।
'सियाअली' को प्रभो चरण पंकज मिले
मधुर करि प्राणधन प्रेमरस दीजिए।
कबहु मम नाथ करि कृपा चितवनि इतै
लेहु अपनाय दीनदुख भंजनम्।
यदपि हौं दीन तोहि दीनके प्रिय सुन्यौ
याहि बल टेरि तब शरण आरत जनम्।
परी भवसिंधु बहु जंतु से ग्रसित जन
त्राहि त्राहि हे अखिल अघ गंजनम्।
'सियाअली' प्राणपती प्राण उद्धारिए
राखिये शरण हे संत मन रंजनम्॥

(१९९)

हिय दुख हेरिय हृदयेश।
जौं पतित तौं तेरिहो हौं सुनिये हे करुणेश।
जानि आपनो करिये पावन करि कृपा लवलेश॥
एकही आधार हमरे तुमहि हो प्राणेश।
'सियाअली' करू कृपा चितवनि हरिए उरका क्लेश॥

(२००)

हे मम प्राण के आधार।
तोहि देखत पड़ी भव में बहत हौं निरधार।
यह हँसी होइहौ तिहारो नाम अधम उधार।
प्रेमजाल बहाय प्यारो तुरत लेहु निकार।
'सियाअली' को किंकरि कर बनि हृदय के हार॥

(२०१)

हे मम नाथ राखिए शरण ।
दीन जानि ना त्यागिये प्रभू दीन के दुख हरण ।
योगी और मुनीश जन तो स्वयं तारण तरण ।।
मोहि से पतितन द्वारा ही प्रभु नाम पावनि करण ।
'सियाअली' तव शरण टेरति दीजिए निज चरण ।।

(२०२)

मन तोहि केहि विधि से समुझावो ।
मानत नाहि कहो तुम मेरी झूठे ही पथ धावो ।।
सुख बदले दुख देत तुम्हे जो ताको नाहि छुड़ावो ।
लियो ठगाय सबनि बैरिन तोहि मति तेही संग भुलावो ।।
झूठ को साँच बनाय दिखावति पिय से विमुख करायो ।
ताहि संग तुम सर्वस हारेव मेरी कही न मान्यो ।।
जो तोहि चाह पिया मिलने की सबनि गली मति जावो ।
'सियाअली' गहु प्रेम गली को तुरतहि प्रीतम पावो ।।

विनय

बहुरि हम तुम कब एक बनैं ।
जीव बनाय विलग कियो जबसे भ्रमत अनेकन क्लेश सनैं ।
दियो जगाय कृपा करि जो अब तो पिय विनती मोर सुनैं ।
हौं तेरो तुम मोर सबै विधि कब बिछुड़े नहि रहत बनें ।
'सियाअली' दिन कैसे बिताऊँ तुमहि कहौ अब कैसे मनैं ।।२०३।।

(२०४)

तरसत हौं दिनरैन नैन भरि कबहूँ देखन पावेंगे ।
गलभुज डारि निहारि छयल छवि निजकर अलके सुधारेंगे ।
हँसि हेरनि की कठिन चोट सहि हठि अधराधर लावेंगे ।
होय निशंक अंक भरि प्रीतम हाय हिया से लगावेंगे ।
'सियाअली' अपनो सर्वस दे उन्हें अपना बनावेंगे ।।

(२०५)

छयल नेरेही निबाहे बने ।
हौ अति अज्ञ प्रीति की रीति जानति नाहि बनाये बनै ।
मिलनि मनोहर कहर करत उर अब प्रीतम उर लाये बनै ।
बनत उपाय नहीं कछु हमसे सब विधि तेरे बनाये बनै ।
'सियअली' के परम सनेही अब न हमहि बिसराये बनै ।।

(२०६)

मन माणिक प्रीतम ही लायक भुलिहु अनत न दीजै आली ।
जौं परि जाय पराये हाथन तो सर्वस सुख छाजै आली ।
यह चंचल विषयीन संग चाहत इन्है न कबहु पतीजै आली ।
खबरदार रहिये इनसे नित प्रीतमही दिसि किजिये आली ।
'सियाअली' जो जो चाहत मन सो प्रभुही सो लीजिये आली ।।

(२०७)

दुलहिन किशोरी मोरी रूप की रगीली गोरो,
हायरे दुलहिन दुलहा निहारै छवि तोर ।
छिनहुं अलग नहि होत हैं पलक,
हाय रे दुलहिन दुलहा निहारे छवि तोर ।
मुखचन्द्र के चकोर निजकर भूषन और बसन
सँवारै दुलहा दुलहिन छबि निरखत भै विभोर ।
'सियाअली' दुलहोपग रचत महावर दुलहा, हायरे....
दुलहा बन्हौलनि प्रेमडोर ।।

(२०८)

हमारी स्वामिनी सब सुखमा की खान ।
कोटिन शरदचन्द्र दुति लाजत रति सत रहत लजान ।
सिय मुख कमल मधुप प्यारे जू करि रहे छबि रसपान ।
निरखत रहत सदा पिय चाहत मंद मंद मुसुकान ।
बरसत कृपाभरी चितवनि या अलिगन जोवन दान ।
'सियाअलो' जीवन के सर्वस ये प्राणहू के प्राण ।।

(२०९)

मो दिशि हेरो कृपा की कोरनि ।
हे श्री जनकनंदिनी प्रियाजू हे प्रियतम चितचोरनि ।
प्रीतम गोद बिहारिनी प्यारी प्रियमुखचंद चकोरनि ।
पिय भुजहार बसत तेरे उर तू पिय अंक मरोरनि ।
'सियाअली' के स्वामिनि सियजू दीजै यह रसबोरनि ।।

अष्टयाम

भैरवी

जागिये दोउ मेरे जीवन प्राण !
प्रात भई अब रजनी विगत भई ससि दुति लागी कुमिलान ।
सखी सरोज ठाढ़ी मग जोवत उदित होउ जुग भानु ।
नींद नेह तजि निज निज प्रेमिन पगिए प्रेम निधान ।
'सियाअली' प्रिय छबि दरसाइय मिलि दोउ रसिक सुजान ।।२१०।।

(२११)

जगे दोउ जिय के जीवन भोर ।
बलिहारी सखि हँसि हेरनि पै अलसाने दृग कोर ।
बिछुरी अलकें छुटी कपोलन चितचोरन बरजोर ।
ऐ प्रानन के प्यारो सजनी दिय मो दृग बिच ठौर ।
'सियाअली' अब छके रहो नित भोरी छबि लखि मोर ।।

(२१२)

दोउ प्राणो के पियरवा जागो हो ।
सारी रैन तलफत मोहि कीनै छबि दरसावो भई अब भोरवा ।
तरसावो मति उन अँखियन को तुम तो हो या दृग के दुलरवा ।
छबि रस प्यावो प्यास बुझावो सरसावो सुख बसिके हियरवा ।
'सियाअली' शीतल करु छतिया अंक भरि लिपटे दोउ गरवा ।।

(२१३)

प्रियाजू जगिए भोर भये।
भुज डोरिन बान्धे पिय छोड़िय उठि अब गर लगिए॥
जानि परत चितचोर ये तेरे सर्वस चोर लिए।
ताते बांधी लिए गर सी गर किय कछु चूक नए॥
दलित भई अंग अंग कपोलन दन्त प्रहार छए।
आज कहाँ कहँ कियो रसिया ने 'सियाअली' उठि कहिए॥

(२१४)

दरसावो सखि मंगलथार :
मंगल सरजू जलभरि झारिन मुख प्रक्षाली भरि प्यार।
मंगल छवि दरपन दरशावो करि मंगल सिंगार।
धूप दीप मंगल दधि मिसरी फल मेवादिक सार।
जलयुत अर्पि करो अचवावन बीरी मसालेदार।
मंगल अतर सुगंध लगावै पहिरावै गलहार।
'सियाअली' करि मंगल आरती गावै मंगलचार॥

(२१५)

गावो री सखि भोर बधाई।
भरि लीजै दृग निरख भोर सुख बरसत है रस पियो अघाई।
रैन जगे रसरंग छके दोउ भोर भये भोरो छबि छाई।
अलसाने दृग झूमि रहे कस जनु निसि की रस देत बनाई।
'सियाअली' के ये प्राण निछावर जब चितये मुख भुज कोई॥

(२१६)

दीजै हमें या सुख की बधाई।
रैन जगे सुख पगे सुरति रस भोर भए कैसी छबि छाई।
बलि जाऊँ रसचिन्ह कपोलन युगल नयन रस रंग सरसाई॥
या रस की हठि लैहौ निछावर बिहँसि दुरावो ना बात बनाई।
'सियाअली' टुक चुम्बन पाऊँ या मुख कीनो निसि सुख दरसाई॥

खेमटा

जुलफन जाल फँसाए छयल छवि बाँकी दिखाए।
सखि दिलदार रंगीलो बनरा अवध नगर ते आये।
इनके रूप अनूप सखी री हियरो बीच समाए।
मन हरी लीनो अवध सांवरे मृदु मुसुकान चलाये।
'सियाअली' अब तो मन सजनो इनके हाथ बिकाये ॥२१७॥

(२१८)

कैसा बना बनि आया हमें चितवन में चुराया।
अब तो मन मेरो सजनी परिगै हाथ पराया ॥
मृदु मुसुक्या के मन को ठग के जुलफन जाल फँसाया।
'सियाअली' मिथिला की गलिन में ऐसो धूम मचाया ॥

(२१९)

सिरकी पगरिया में तोरा अजब रंगदार दुलहा।
मदमाते नयनमां तुम्हार दुलहा ॥
कानों की कुण्डल पै कैसी लटक झलकदार दुल्हा।
जनु चूमै कपोलना तुम्हार दुल्हा ॥
काले काले जुल्फैं ये तोरा अजब घुंघरार दुल्हा।
मनहरनी हँसनिया तुम्हार दुलहा।
'सियाअली' तोरे पर बारि वारि जाऊँ बलिहार दुल्हा।
मोरा हो जा हियरवा का हार दुल्हा ॥

(२२०)

अवध पिया बाँका बना दिलदार।
शिरपै मौर मणिन की राजै मोतिन झालरदार।
केसर खौर रचित भाजन पै कंज नयन कजरार।
नासामणि लटकन मुसकन पै दीजै उर हार।
'सियाअली' सिय दुलह प्यारा जोवन धन आधार ॥

(२२१)

सिया दुलहे की हँसन हिय हर लई।
शिर पर मौर खौर केशर का चितवन में कछु टोना सो कर गई।
तबसे नयन बिकल भई सजनी कजरारे अँखियन से लड़ गई।
'सियाअली' चितचोर छयल को मृदु मुरति मेरे दृग बोच अड़ गई ॥

(२२२)

तुम तो मन हरि लीना ये दुलहा ।
अवध छयल दिलदार सलोना बाकी रूप नवीना ।
कजरारे मतवारे नयन की चोट बरबस कीना ।
तापर यह मुसक्यान माधुरी मेरो बरबस छीना ।
'सियाअली' अब तो तनमन सब तेरे ही रंग भीना ।।

परिछन

दुलहा आये अंगना परिछि लेउ री ।
मंगलथार में बरा बराय लेव दीउना निहारी लेउ री,
दुलहा मनमोहना निहारि लेउ री ।
मुख भरि पनमा खवाय देव अली लगाय देव री,
कजरा दूनो नयनमां लेउ री ।
दधी अछत सिंदुर की टीका हंसाय लेव री,
चुनचुन के कपोलना हंसाय लेउ री ।
'सियाअली' दुल्हाके लेउ बलइया बसाय लेउ री,
अपने उर एना बसाय लेउ री ।।२२३।।

राजकुमार की झांकी के पद

लगी तोसे नेहिया नाही छूटी ।
नेहि नयनमा कहि नहि माने बरबस मुखछबि लूटी ।
कानि गई कुलकी सबही विधि नयन नयन अब जूटी ।
'सियाअली' दृग छाके रहे नित पियत रूप रस बूटी ।।

(२२४)

साँवलिया मैं तोरे रंग रंग गई रे ।
जहाँ देखो वहाँ श्याम सुंदरवर तनमन ऐसी पग गई रे ।
जो चाहै सो कहै किन कोई अब तो लगन तोसे लगि गई रे ।
'सियाअली' बेदरदी तेरे मन्द मुसकन पर ठग गई रे ।।

(२२५)

दृगन सों काहे छिपत हौं प्यारे ।
हियसे निरही आप मिलत हौं होन चाहत न्यारे ।
कौन चूक पिया इन नैनन को जो तुम मोहि बिसारे ।
एसो तुमको निशदिन चाहत है तुम याके दुलारे ।
'सियाअली' समदर्शी कहत सब क्यों इस भाँति निहारे ॥

(२२६)

नेही कहा के बेदरदी न हूजै ।
लगन लगी तेरे चरणन में कर गहि प्यारे निबाहि लीजै ।
हौ तो निबल सबल हौ प्रीतम मोहि दिशी हेरी कृपाबल दीजै ।
'सियाअली' को भवबंधन से लीजै छुराय अपनो अब कीजै ॥

गजल

क्यों किया दिलदारी हमसे जो निठुर बनना ही था ।
तुरत दे देते जवावै जो निठुर बनना ही था ।
हम तड़पते हैं सजन तुमने खबर लीन्ही नहीं ।
प्राण ले लेते उसी दम जो जखम करना ही था ।
नेह की फांसी गले में डालकर बिकल किया ।
हाय निर्मोहि तुम्ही पैं आय हमें मरना ही था ।
बिरह की आँचे कहीं तनमन में मेरो लगी रही ।
हाय हमको रात दिन इस आग में जलना ही था ।
'सियाअली' तुम्हारी बेरहमी जानी ही नहीं ।
हमको तेरे इश्क के दरिया में बहना ही था ॥२२७॥

दादरा

तेरी बांकी छटा नित देखा करै ।
नई नई यह प्यारी छबि में छिन छिन प्रीतम न छका करैं ।
दिल की दरद कहानी तुमसे रात दिन हम लेखा करैं ।
'सियाअली' मृदु हँसि हेरन रस प्यासीं दृगन से चखा करैं ॥२२८॥

(२२९)

सिया दुलहे से लगी मोरी नयना।
पगिया में लागी पेंच पंचरंगी, अलकन में अरुझी सुरझैना।
मंद मंद मुसकन में लागी तिरछी चितवनि रस भरी बैना।
'सियाअली' बिन मोल बिकी मैं बिन देखे पड़ती नही चैना॥

(२३०)

सिय प्यारे लागी हमरे जियरा।
बैठे कनक भवन सिंहासन मन्द मुसुकान हारत हियरा।
शीश मुकुट कानन में कुण्डल उर मणिमाल बसन पियरा।
'सियाअली' नित पान पवैहौं, रहिहौं चरण कमल नियरा॥

(२३१)

मोरा जिया तोसे लागी दिन रतिया।
अब ये नयन तिहारे सांवलिया, बसि गई श्याम सुरतिया।
पलक ओट मति होओ सजनमा, राखौ लगाय तोहि छतिया।
काज बिसारि दई हम सिगरो, भूलि गई मति गतिया।
'सियाअली' सबही बिधि तोही दियो सुनाय मृदु घतिया॥

(२३२)

सिया दुल्लह सलोना सांवला।
केशर खौर पाग केशरिया, कलंगिन की छवि छावला।
मिथिन नगरिया शोर माचो री, किन गलियन से आवला।
मृदु मुरति सुकुमार सांवरो, प्राणहु ते प्रिय लागला।
'सियाअली' सिया दुलह जू की तिरछी चितवन भावला॥

(२३३)

सियदुल्लह छयल मन लोभावने।
शिरपै मौर खौर केशरकी काजर दृगन सोहावने।
मिथिला शहर के डगर डगर में यह अनुपम छवि छावने।
जो आवत देखन छवि छकि छकि सो नहीं चाहत जावने।
'सियाअली' अलबेला दुलहा रहे दृगन के सामने॥

(२३४)

सिय प्यारी के दलहा मनमोहना।
आये छबि छाये मिथिला में सबहि नचावत जोहना।
अब तो छयल मिथिला को गलियन चलिये मोरी गोहना।
चलिये महल सियाजू के टहलमें रचिये महावर सोहना।
'सियाअली' अनुपम सुख पइहो मनमोहनो संग मोहना॥

(२३५)

सिया दुलहा छयल मोरा दूलरुवा।
अपना दुलरूवाके पगिया सँवारू कलंगिन में मोतिन लरवा।
अपने दुलहवाके जुल्फे सँवारू, लै लै सोंचो अतरवा।
अपने दुलरूवा के केशर रचाऊं, कमल नयन बिच कजरवा।
अपने दुलरुवा के गरवा लगाऊँ, बनि बनि हीरन के हरवा।
बड़ा भागन बना आये जनकपुर, घुमे सिय संग भँवरवा।
दुल्हा 'सियाअली' के दूलरुवा, बँधि गये सियाजुके आंचरवा॥

(२३६)

मैं तोरी छाकी हो राजबनरा।
तबसे चित मे चैन न आवे जबसे नवलवर मोहि दिशि ताकी।
बिन देखे कल कैसे पड़ेगी, चोरी गई तन मन धन जाकी।
कहा कहुँ कछु कहत बनैना, हिय बिच गड़ गई चितवनि बांकी।
'सियाअली' घुमति गलियन में मतवारो तेरे नेहन छाकी॥

झूला

तेरी झूलन पै बलि जाऊँ रसिया।
झूलत हौ लिय संग रसीलो चित चोरत मृदु हँसिया।
कबहुँ झुलावत हौ झोकन से कबहुं लपटि की गर गसिया।
कबहुं झूलन की सुधि झूलत, हेरत हौं मुख कहि कहि पतिया।
कबहुँ अधर सुधा रस पीवत, कबहुँ लगावत छतिया।
'सियाअली' पगी रस झुलन में मेरे नैनन छवि बसिया॥२३७॥

(२३८)

झूला झुलाओ मोरी सजनी धीरे धीरे।
ताल मृदंग पखावज बीणा बजावो मोरी सजनी धीरे धीरे।
गौर मलार राग सोरठ सुदि गावो मोरी सजनी।
'सियाअली' प्रीतम सो आंखियां मिलावो मोरी॥

चैता

सजनी अवध छयल चित चोरवा हंसि हंसि हियरा हरलै ना।
करि करि तिरछी सैनन की कोरवा नजरा भरलैना बेदरदी।
मीठी मीठी बैना कहत रस बोरवा, नियरा अईलै ना।
'सियाअली' लगो लगी के गरवा, जीयरा लीहलै ना॥२३९॥

जेवनार गारी

छयलवा को देहो चुनि चुनि गारी।
कंचन थार छतिसो व्यंजन, आनि धरो मनि थारी।
जेवत लालन सिद्धि सदन में, गावत सरहज सारी।
राजकुमारी अति सुकुमारी, शान्ता बहिनि तुम्हारी।
देना तो चाहिये राजकुँवर को, लै भागे जटाधारी।
राजमहल की ऐसी रीति है, बाहर काह गुजारी।
लूटि न जावें अवध नगर की, सिगरी कन्या कुमारी।
जेवत लालन मृदु मुसकावत, 'सियाअली' बलिहारी॥२४०॥

(२४१)

रंगीली गारी रस भरी इनका नहीं दीज।
अवध छयल दिलदार बने यो, बहु लज्जित नहिं कीजै।
गुरु वहिनि संग में विहार करत जो, सो अचरजो नहीं कीजै।
अवध लली इनकी वहिनि जो, ति को कहा पतीजै।
'सियाअली' उनको क्या कहना, शान्ता शांत रस दीजै॥

(२४२)

तुम्हे गारी सुनैबे और रसिया राघव लला।
जेवत से पिय हाथ न रोकिये, और उठायें कंवर।
सारे जगत की रीति और है, तुम्हारी रीति कछु और।
जो तुमसे मिलने को चाहत, शान्ति को पकड़त दौर।
ताहि के ढीग रहत हो प्यारे, बहिन भाई एक ठौर।
गुरु कन्या महं केलि करत हो सरि जग में सौर।
'सियाअली' कछ और पाइये जीवन धन चितचोर॥

(२४३)

क्या अजब रंगदारी ललन ससुरारी की गारी।
बड़ी भाग बनि आये जनकपुर पाय सरहज सारी।
प्राणहु सो प्रिय पाहुन मेरे, सुनिय बात हमारी।
शोभा धाम श्याम सुन्दर वर, सुनिये बात हमारी।
कैसे बचि होयेगी तुमसे, अवधपुरी की कुमारी।
औरो एक सही मैं जानति, तव कुल की उजियारी।
अति अनूप मुनि जन जेहि जांचत, ऐसी बहनि तुमारी।
जिनकी चाह करत सारें जग, तिनकी क्या रखवारी।
मिथिलापुर घर घर में रखिये, राजहि शान्ता कुमारी।
'सियाअली' निज वहिनी के गुन हिय बिच लीजै बिछारी॥

(२४४)

गारी खूब सुनैबै छयल अलवेला लला जू।
दृग पुतरिन के पीठा बनैवै, अँखियन महँ बैठैवै।
सरस रुचिर छतिसो व्यंजन, हित सो आन जे पैवै।
ससुरारी की गारी है प्यारी, सुनि सुनि कै न लजैवै।
एकै बहिन आपके लालन, हम पूछै केहि दैवै।
कतै जतन करत है मुनिजन, तुम वहिनि के पैइवै।
बिन शान्ति सुख लहत न काहुँ झूठ तनक नहि कइवै।
सब जग चाह करत शान्ताजू को, कहँ कहँ उनहि पठैवै।
दीजै वहिन दान मिथिला में, 'सियाअली' यश पइवै॥

(२४५)

सुनो अवध छयल चितचोर रसभरी गारी सुनो।
सुंदर साँवलो रूप तिहारो विश्वविलोचन चोर।
पहिले चोरेल अवधतियन को अब आये इत ओर।
ऐसी रीति तिहारो लालन जग मे करत अजोर।
छोड़े बनि है पिता कन्या को ऐसो तुम पर जोर।
हँसनफसन में फँसि 'सियाअली' बने रहो राजकिशोर॥

(२४६)

ननन भरि लखि लैहों ललन को गारी न दैहों।
सखि ये जीवनधन दुलहे को कहि मृदुबैन हंसैहों।
विश्वसुखद इनकी बहिनी जो तिन उपमा नहिं पइहों।
सुन्दर छवि इनकी बहिनी युत हियरा मँह बसइहों।
नित सुखशांति बसै मिथिला में लइहों भागे जो पइहों।
'सियाअली' दोउ भाई बहिन पै बार बार बलि जईहों॥

(२४७)

गौर श्माम की चोट बुरी री।
जब ते लखे युगल छवि आली एकहु पल नहिं नींद पड़ी री।
बौरी भई डोलत घर बाहर मौन कबहुँ कबहुं झगरी री॥
युगल नाम रट रैन बितावत नैन लगत अंसुअन झरी री।
दौरि दौरि पौरी पहँ आवत काहु को नहिं शंक करी री॥
बिहँसत मंद ठठाय हँसत सोइ कबहुँ लाय बतिया न लड़ी री।
'सियाअली' भई प्रेम दिवानो दरस प्यास अखियान भरी री॥

(२४८)

दोउ प्रिय नैन सैन बतराते।
कबहुँ झूमत चलत मंद गति झूमत मत्त गयंद लजाते।
कबहुँक दै गलबाहिन प्रिय के नैन सयन बतराते॥
कबहुँक चढ़ि द्रुम डारियन झूलत तब अति मोहि सोहाते।
झूलत दोउ टकरात परस्पर बिहँसि बिहँसि बल खाते॥
प्रिय की पीठ मिलत प्यारी सों दोउ भुज पाश बँधाते।
कबहुँ टेरि मोर बंदर दोउ निज कर तिनहि चगाते॥
कबहुँक पपीहा किर मोर पिक बोलनि बोल रिझाते।
'सियाअली' मध्यस्थ बनावत हार जीत के नाते॥

(२४९)

प्रियाजू बैठत अति इठलात।
को बैठे इहि ओर तिहारे तब मुख नहिं दिखात ॥
कबहुँक हटे बैठे प्रिय स्वामिनि तबहुँ न खरो लखात।
पुनि कछु हटि हटि बैठत लालन प्यारी अति इतरात ॥
हटत हटत सन्मुख प्रिय आये प्यारी तरफ लजात।
'सियाअली' वह अद्‌भुत शोभा देखे ही बनि जात ॥

(२५०)

महावर प्रियाजू की अधिक ललौही।
लखि लखि लाल निहाल होत अति मानत नैनन सुफल धनुषधर।
समता करत जबहिं गुलाब सौं अधिक लजात गिरत भू तल पर ॥
ये मुरझात छिपत जब हिरषिये विकसत अति निरखि निशाकर।
अधर लालिमा लाल मिलावत फाके अधर लखात ललन कर ॥
मनहु लाल अनुराग लालिमा धरि मूरति बनी महावर।
'सियाअली' अतिसय सुख मानत जबहि महावर देत पगनि पर ॥

(२५१)

मेरी तो इक जनकललीजू की आस भली।
मैं तो वेलि उनहिं की बोई नेह सुधा जल सींच फली।
प्रेम पुष्प को गंध बहत नित प्रीत रीति की फलन फली ॥
नित अति चाखत सरस युगल रस पिय प्यारी की प्रेम पली।
तीर्थ यात्रा कछु न जानत दोउ प्रीतमजू की रंग गली ॥
'सियाअली' सिय रसिक स्वामिनि उनकी मेरो बनी भली ॥

(२५२)

सियाजू की बिंदिया जादू भरी।
जेहि बिंदिया वश होत लालजू पिय के नैन अरी ॥
जाहि निरखि मन बंधत रजु टरत न एक घरी।
प्रिय की प्रीत रही उर अन्तर मानहु सो उमरी ॥
बहै लालिमा वर्ण रूप धरि प्रिया सुशीष धरी।
'सियाअली' हमरी वह सरबस जीवन मूरि जरी ॥

(२५३)

प्रियाजू की जादू भरी मुस्कान ।
जेहि लखि भूलि जात रघुनन्दन मरजादा की बान ।
सुधि न रहत निज तन की कहुँ पट कहुँ धनुबान ॥
इतो बढ़त सौंदर्य्य प्रिया को विहँसत चावत पान ।
भूलत निज सुन्दरता प्यारे गायब होत गुमान ॥
'सियाअली' यह मुस्कान तिहारी मनहु त्रिवेणी नहान ॥

(२५४)

प्यारी लगै प्रयाजू की विहँसन ।
जे विहँसनिवश होत लाल नित जे विहँसन लालन मन हुलसन ।
जे विहँसनि दामिनि सी राजत, दूर होत माया की झुलसन ॥
'सियाअली' विहँसनि को लाभिन सुखद सनेह सरस रस बरसन ॥

(२५५)

सियाजू के कंकन जादू भरे ।
जबहिं हिलत पिय पिय धुनि गुंजत सुनि सुनि रघुवर चौंकि परे ॥
पूछत का टेरत मोहिं प्यारी नहिं नहिं कंकन शब्द भरे ।
स्वर सुनि चकित होत ब्रह्मादिक शंकर ध्यान समाधि टरे ॥
उमा सहित भये चकित रमापति धन्य श्रवनन ये शब्द परे ।
'सियाअली' बाजत पहनावत स्वर सुख लूटत पान करे ॥

(२५६)

प्यारी प्यारी लागै प्रियाजू की मुंदरी ।
जेहि मुंदरि में पिय की झाँकी होत रहत निश दिवस सुंदरी ।
प्रिया ओर जब भुजा करत पिय मुख दरसत मधुर मधुरी ॥
सीताराम नाम प्रिय अंकित युगल अंगुरियन जब दोउ पहिरी ।
'सियाअली' मुदरी छवि निरखि जबहि भुजा मम अंश धरी ॥

(२५७)

सियाजू की कंठमाल लगै अति प्यारी ।
मुक्ता स्वेत बिच नीलम दोउ प्रियतम रंग वारी ।
मध्य सुवर्ण विन्दु अस राजत मनहुं त्रिवेणी न्यारी ॥
उरि उरि माला प्रिय उर लागत श्याम झलक रंग धारी ।
माला सदृस पिय भुज शोभित प्रिया कंठ बीच डारी ।
मनहु शिव मुरति पर लिपटी दोउ नागिनि अति कारी ।
'सियाअली' माला की शोभा जानहि अली मन हारी ॥

(२५८)

लखि मैं प्यारी की मुस्कान।
काह करूँ तबते मोहिं सजनी बिसरी कुल की कान।
काम वान ते सहज सुनु सखी अधिक नुकीली सान॥
मनहुँ हाँस रूपिणि आस कहँ ऐंचि दई मुस्क्यान।
देह गेह की सुधि न रही मोहिं बिसरो गीता ज्ञान॥
कहा सार संसार सुखन में पाई सुख की खान।
'सिय अली' मुस्कान दान की नित याचत वरदान॥

(२५९)

सियाजू को मुख लखि चंद शरमायो री।
ताहि समय ते घटत बढ़त नित दूर गगन पर छायो री॥
लखि मुख कमल लजावत पंकज साँझ होत मुरझायो री।
रति मुख निरखि निरखि शरमावत कबहुँ न काहु लखायो री॥
रघुवर मुख समता नहिं पावत श्याम वरन जो पायो री।
'सियाअली' सिय मुख सम सियमुख जाने जेहि लखि पायो री॥

(२६०)

दंत पंक्ति राजत अति प्यारी।
जब खोलत कछु कछु सरसत झलक मिलत जब विहँसत प्यारी।
मानहु दामिनि की लघु कलिका नभ ते उतरी देहि छवि न्यारी॥
गौर वर्ण महु मिल अति सोहत चंद मिलि चपला अति प्यारी।
मानहु हिमगिरि पर शोभित अति दामिनि को लतिका रुचिकारी॥
नील गगन मँह मनु तरावली नभ गंगा पूजत अधिकारी।
'सियाअली' दंतन की गनना करत जबहि विहँसत पिय प्यारी॥

(२६१)

भोली भोली लागै प्रियाजू की बातैं।
जिन बातन तरसत रघुकुल मणि सुनिबे कहँ ललचत दिन रातैं।
बिहँसत प्रथम कहत पुनि बतियां रुप सुधा की जनु बरसातैं॥
थोड़े अक्षर अर्थ घनेरो समुझ पड़त स्वामिनी कृपा तैं।
बोलत जब लखात दंतावली समता करत चपल चपला तैं॥
"सियाअली" सुनि सुनि अघात नहिं ऐसेई चहत सुनौं करि बातैं॥

(२६२)

सुमनन सजि प्रियाजू की वेणी।
चम्पा जुही चमेली गेन्दा गुलाब सुरभित सुख देनी॥
गुंथत गुहत इतर सौं वासित रघुकुल मणि शोभा की सेनी।
'सियाअली' प्रिय उर अति राजत जब उड़ि परत टिकत दिन रैनी॥

(२६३)

सुन्दर भई सुन्दरता निरखत।
कोमलता पाई कोमल कुसुम दृष्टि कै बरसत॥
हंस हँस भये हंसनि विलोकन दामिनि मुस्कान मन हरत।
कमल भये कटाक्ष के फेरत नैनन निरखि भये अति दरसत॥
श्याम भये लखि श्याम केश कँह राम भये रामासुख झलकत।
'सियाअली' भई सिया साथ सो हरषत रहय प्रिया के हरषत॥

(२६४)

ऐसी जनक कुमारी हमारी।
करुणासागर की लहरी सी पल पल करत सम्हारि हमारी।
जैसे उर में रुचि उपजत है पुरवत इक की चारि हमारी॥
ऐसो रक्षक पाइ कहाँ पुनि कौन करि सकत बिगारी हमारी।
'सियाअली' स्वामिन सहारे सोवत गोर पसारि हमारी॥

(२६५)

कब मिलिहैं पद पंकज प्यारी।
सुषमा अयन प्राण की सर्वस श्री निमि राजदुलारी।
एक बार दृग कोर इतै करु हे दीनन हितकारी॥
यद्यपि अधम तऊ तेरी ही हौं भरमवश तोहि बिसारी।
'सियाअली' तोहि कैसे मिलिये बिन प्रिय कृपा तुम्हारी॥

(२६६)

बरसत हम सिय महरानीजू के गाँव।
तिरहुत देश प्रसिद्ध जनकपुर तेहि हमारे ठाँव।
कनक भवन षट ऋतु कुंजन में खेलत संग सिय दाँव॥
सर्वस भाग सुहाग हमारे श्री जनकललीजू के पाँव।
'सियाअली' सियचरण छोड़ि अब न जैहौं दोसर ठाँव॥

□

प्राप्ति-स्थान

- **श्री वदेही वल्लभ शरण**
  श्री हनुमान बाग, वासुदेव घाट
  अयोध्या—२२४१२३

- **श्री रसमोद कुंज**
  ऋणमोचन घाट,
  अयोध्या – २२४१२३

- **श्री वंदेही शरण**
  अवधेश वस्त्रालय, नयाघाट
  अयोध्या – २२४१२३

- **श्री मनोज कुमार**
  वाल्मीकि प्रकाशन,
  काजीपुर, पटना—८०००४

निछावर १५/